दिल्ली प्रैस की सजग सरस युवा पत्रिका
दिसंबर 2024 ₹ 40.00

मुक्ता

गर्लफ्रेंड जब इंस्टा मौडल हो

सोशल मीडिया सैंसेशन **अदिति मिस्त्री**

इन्फ्लुएंसर्स पर निर्भर होना **कितना सही**

हरियाणा पंजाब के वायलैंट गाने

थप्पड़ गर्ल **श्रीलीला**

मुक्ता

दिसंबर 2024 अंक : 1039

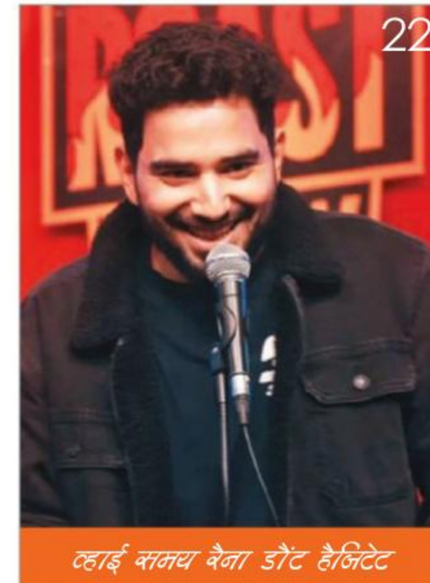

22 व्हाई समय रैना डौंट हैजिटेट

10 कहां गायब हो गए स्टूडैंट मूवमैंट

32 सोशल मीडिया सैंसेशन अदिति मिस्त्री

30 एडिन रोज की गंदी बात

लेख

जब गर्लफ्रैंड इंस्टा मौडल हो 4
हरियाणा पंजाब के वायलैंट गाने 14
पुष्पा 2 की थप्पड़ गर्ल श्रीलीला 18
2024 में छाए कपल इन्फ्लुएंसर्स 20
ट्रैवल इन्फ्लुएंसर्स की ऊपरी चमकदमक 24
कन्फ्यूज हैं जेनजी और मिलेनियल 26
कपल इन्फ्लुएंसर्स नौटी गेम्स 36
जब टीचर पर क्रश हो जाए 40
इन्फ्लुएंसर्स पर डिपैंडैंसी कितनी सही 44

स्तंभ

लव लैटर्स 8
मुक्त विचार 9
इंट्रैस्टिंग फैक्ट्स 34
प्रेम समस्याएं 35
टैक गैजेट्स 38
फैशन एंड स्टाइल 43

कला . क्रांति . कर्मण्यता

दिल्ली प्रैस
सामाजिक क्रांति की पत्रिकाएं
संस्थापक : विश्वनाथ
(1917-2002)
33 पत्रिकाएं 10 भाषाएं

रचनाओं, स्तंभों व संपादक को पत्रों के लिए ईमेल :
editor@delhipress.biz

8447173456

निमंत्रणों प्रैस सूचनाओं के लिए ईमेल :
invities.pressrelease@delhipress.biz

ग्राहक विभाग के लिए ईमेल :
subscription@delhipress.in

संपादक व प्रकाशक : परेश नाथ

मुख्य संपादकीय व विज्ञापन कार्यालय : दिल्ली प्रैस भवन, ई-8 झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055.

अन्य कार्यालय : ● 31 ग्राउंड फ्लोर, नारायण चैंबर्स, आश्रम रोड, **अहमदाबाद-380009. फोन : 079-26577845** ● बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई-400031. **फोन : 022-24122661/ 43473050, 9833151545. आईएनएस टावर, बांद्रा कुर्ला कौंप्लैक्स, मुंबई-400051. फोन : 022-48264114** ● 11, फर्स्ट क्रौस, बालप्पा गार्डन, शिवाजी नगर, **बेंगलुरु-560051. फोन : 080-42013076** ● 14, पहली मंजिल, सीसंस कौंप्लैक्स, मांटीअथ रोड, **चेन्नई-600008. फोन : 044-28554448** ● 122, पहली मंजिल चिनाय ट्रेड सैंटर, 116, पार्क लेन, **सिकंदराबाद-500003. फोन : 040-27896947, 27841596** ● जी-7 पायोनियर टावर्स, 1 मेरीन ड्राइव, **कोच्चि-682031. फोन : 0484-2371537.** ● 16 ए, अमृता बनर्जी रोड, पहली मंजिल, कालीघाट, नजदीक बासुश्री सिनेमा **कोलकाता-700026.** ● 12, ग्राउंड फ्लोर, आशियाना टावर्स, एग्जीबिशन रोड, **पटना-800001. फोन : 0612-2323840** ● फ्लैट नं. बी-जी/3,4 सप्रू मार्ग, **लखनऊ-226001. फोन : 05222618856** ● गीतांजली टावर, शौप नं. 114, (डाक्टर व्यास अस्पताल के सामने) अजमेर रोड, **जयपुर-302006.** ● बी-31, वर्धमान ग्रीन पार्क कालोनी 80 फुट्या रोड, पीछे अशोका गार्डन थाना, **भोपाल-462023. फोन : 0755-2759853, 2573057.**

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन पीटीई लिमिटेड की बिना आज्ञा कोई रचना किसी प्रकार उद्धृत नहीं की जानी चाहिए. मुक्ता में प्रकाशित कथा साहित्य में नाम, स्थान, घटनाएं व संस्थाएं काल्पनिक हैं और वास्तविक व्यक्तियों, संस्थाओं से उन की किसी भी प्रकार की समानता संयोग मात्र है.

दिल्ली प्रैस पत्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेश नाथ द्वारा ई-8, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएस पीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, डीएलएफ-50, इंडस्ट्रियल एरिया, फरीदाबाद, हरियाणा-121003 में मुद्रित.
संपादक : परेश नाथ.

वार्षिक मूल्य केवल चैक/ड्राफ्ट/मनीऔर्डर द्वारा ही 'दिल्ली प्रकाशन वितरण प्राइवेट लिमिटेड' के नाम से ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी मार्ग, नई दिल्ली-110055 को ही भेजें. वी.पी.पी. स्वीकार नहीं किए जाते.
Ph.: 91-41398888, Extn. No. 119,221,264.
(Mon to Sat 10 am to 6 pm)
Mobile/SMS/Whatsapp: **08588843408**
Email : subscription@delhipress.in

COPYRIGHT NOTICE
© Delhi Press Patra Prakashan Private Ltd., New Delhi-110055, INDIA. No article, story, photo or any other matter can be reproduced from this magazine without written permission.

मूल्य : एक प्रति 40.00. एक/दो वर्ष : ₹ 522/996. विदेशों में मूल्य : एक प्रति : 0.47 (डाक व्यय अतिरिक्त)

International Subscription Price Air mail Charges		Express Delivery Europe & South America		Express Delivery SAARC Countries		Express Delivery Rest of Countries	
1 year	50	1 year	210	1 year	120	1 year	140
2 year	95	2 year	420	2 year	240	2 year	275

(All the Prices given are in US$)

क्यूआर कोड स्कैन करें

लेख • शिखा जैन

गर्लफ्रैंड जब इंस्टाग्राम मौडल हो

क्या हो जब गर्लफ्रैंड इंस्टाग्राम मौडल बन जाए? क्या रिश्ता वैसे ही चल पाएगा जैसे चलता आ रहा था? क्या एक इंस्टाग्राम मौडल और सामान्य लड़के के बीच रिश्ता टिक सकता है?

इंस्टाग्राम दुनिया का सब से पसंद किए जाने वाले प्लेटफौर्मों में से एक है. यहां पर लोग सब से ज्यादा फोटो व वीडियो शेयर करते हैं. इंस्टाग्राम ने कई लोगों को कमाई का जरिया भी दिया है, खासतौर पर उन मौडल्स को जो बेझिझक और बेबाकी से अपनेआप को लोगों के सामने प्रेजैंट कर सकती हैं. ऐसी मौडल्स की संख्या हजारों में है. वे इस से काफी कमा रही हैं. उन के लाखों फौलोअर्स हैं और उन की लाखोंकरोड़ों में कमाई भी हो रही है.

वैसे तो यह अच्छी बात है लेकिन मुश्किल उन लड़कों के लिए हो जाती है जिन की ये गर्लफ्रैंड्स हैं. सोचिए, कोई कपल है जहां लड़का अपनी वही 9:5 जौब कर रहा है और लड़की कुछ सालों में इंस्टाग्राम स्टार बन गई है. उस का लाइफस्टाइल पूरी तरह बदल गया. वह बड़ेबड़े सैलिब्रिटीज के बीच उठनेबैठने लगी है. वह लंबीलंबी गाड़ियों में घूमती है और बड़े से बंगले में रहने लगी है. लेकिन लड़का वहीं है जहां था. फर्क सिर्फ स्टेटस में नहीं, उस के खानपान और कपड़ों में भी आएगा.

क्या हो जब वह किसी इवैंट में बैकलैस ड्रैस पहन कर गई हो और उसी के जैसा कोई और मेल इन्फ्लुएंसर फोटो खिंचवाते हुए उस की पीठ व कमर पर हाथ रखे तो मेल ईगो के लिए उस के बौयफ्रैंड को यह सहन कर पाना कितना संभव है? सिर्फ यही नहीं, क्या अब महंगे रैस्टोरैंट, कैफे और कपड़ों के मौल का बिल लड़का चुका पाएगा?

दोनों के बीच क्लास का एक बड़ा फर्क आ गया है. फिर ऐसे में बौयफ्रैंड अपनी इंस्टाग्राम मौडल गर्लफ्रैंड के साथ कैसे अपने नौर्मल लाइफस्टाइल के साथ रहेगा? क्या वह खुद उस के सामने छोटा और कमतर महसूस नहीं करेगा? क्या वह मौडल इन्फ्लुएंसर अब उस के साथ रहना चाहेगी? नहीं, बिलकुल नहीं.

इस की वजह है इंस्टाग्राम मौडल्स का लाइफस्टाइल, उन का रुतबा, शानोशौकत, पैसा. आइए एक नजर इंस्टाग्राम मौडल्स पर और उन की लाइफस्टाइल पर डालें–

ग्लैमर बिखेरती सोफिया

इस लिस्ट में सोफिया अंसारी का नाम आता है. सोफिया अंसारी इंस्टाग्राम पर बड़ी सैलिब्रिटी है. वह गुजरात से है. अपनी पढ़ाई के साथसाथ उस ने मौडलिंग भी शुरू की और कई टीवी शो व फिल्मों के लिए औडिशन दिए. लेकिन जब उसे सफलता नहीं मिली तब उस ने टिकटौक पर रील बनानी शुरू कर दी.

सोफिया की लाइफस्टाइल देख कर कोई भी अपना माथा धुन लेगा. वह लग्जरी होटलों में रुकती है, महंगे कपड़े पहनती है, विदेशों में घूमती है. क्या ये खर्चे एक आम लड़का उठा सकता है?

अभी हाल ही में सोफिया अंसारी ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर अपनी कुछ तसवीरें पोस्ट कीं. तसवीरों में सोफिया ने ब्रा नहीं पहनी है और डैनिम जींस के साथ एक टौप पहना हुआ है. सोफिया ने अपने इस टौप के बटन खुले रखे हैं जिस से उस का डीप क्लीवेज दिख रहा है. यह फोटो बोल्ड और सैक्सी है. सिर्फ इतना ही नहीं, इस फोटो में सोफिया ने अपनी जींस की जिप भी नहीं लगाई है और उस की इनरवियर दिखाई दे रही है.

चलिए ये छोड़िए, एक पल के लिए मान लीजिए लड़का उस के खर्चे उठा भी ले पर क्या उस का पब्लिक में ऐसे बोल्ड दिखना वह झेल पाएगा?

आज सोफिया को एक करोड़ से भी ज्यादा

लोग फौलो करते हैं. वह सोशल मीडिया पर काफी ऐक्टिव रहती है और अकसर अपने फैंस के साथ तसवीरें व वीडियोज शेयर करती रहती है. इस तरह सोशल मीडिया पर सोफिया के बारे में खूब चर्चा होती रहती है. यही वजह है कि वह अपने इस हौटनैस के अवतार से काफी कमाई कर रही है.

हार्ड गर्ल गरिमा

वहीं गरिमा चौरसिया भी कुछ कम नहीं है. गरिमा 25 वर्ष की उम्र में एक पौपुलर सोशल मीडिया स्टार बन गई है. गरिमा के इंस्टाग्राम पर डेढ़ करोड़ फौलोअर्स हैं. गरिमा अकसर अपनी हौट फोटोज पोस्ट करती है और अपने फैंस को क्रेजी बना देती है. हरिद्वार की रहने वाली गरिमा वैसे तो पेशे से इंजीनियर थी पर टिकटौक पर रील बनाने के बाद वह फेमस हो गई और अब इंस्टाग्राम पर भी लोगों को खूब अपना दीवाना बनाया हुआ है. गरिमा चौरसिया इंस्टाग्राम पर आएदिन अपनी ग्लैमरस फोटोज डालती रहती है.

गरिमा चौरसिया ने फिल्म 'गली बौय' के गाने 'बहुत हार्ड...' पर अपनी पार्टनर रूगीस विनी के साथ टिकटौक वीडियो बनाया था. वह वीडियो जबरदस्त हिट हुआ था. उस के बाद गरिमा को टिकटौक की 'बहुत हार्ड गर्ल' नाम मिला. उस के लगभग हर वीडियो पर लाखों में लाइक्स आते हैं.

नेहा की कातिलाना अदाएं

इसी तरह नेहा मलिक है. भारत में 2023 की सब से हौट, सब से सुंदर इंस्टाग्राम मौडल में उस का नाम आता है. उस ने 2012 में अपने मौडलिंग कैरियर की शुरुआत की थी.

वह पंजाबी म्यूजिक वीडियो और अलबमों में भी काम कर चुकी है. सोशल मीडिया पर वह काफी ऐक्टिव रहती है. आएदिन वह अपने हौट फोटोज भी शेयर करती रहती है. अपनी खूबसूरती और बोल्डनैस के लिए नेहा मलिक फैंस के बीच काफी पौपुलर है. उस के इंस्टाग्राम पर 4.1 मिलियन फौलोअर्स की लंबी लिस्ट है. उस की फिगर बोल्ड है.

नेहा के बारे में एक बात जो अकसर कही जाती है वह यह है कि उस का रवैया बेबाक है, जो उस के फैंस को बेहद पसंद आता है. पौपुलर हसीना नेहा मलिक की खूबसूरती के चर्चे तो हर तरफ हैं.

नेहा मलिक का हुस्न देख फैंस भी तारीफों के पुल बांधते नजर आ रहे हैं. नेहा मलिक ने अभी हाल ही में अपनी नई तसवीरें शेयर की हैं. उन तसवीरों में नेहा मलिक बिकिनी पहने दिखाई दी. नेहा मलिक का यह लुक सोशल मीडिया पर जम कर वायरल हो रहा है. नेहा मलिक इस तसवीर में अपने टोन्ड लैग्स फ्लौंट करती हुई नजर आ रही है. नेहा मलिक की इस तसवीर को फैंस जम कर शेयर कर रहे हैं.

बोहो गर्ल कृतिका

बात करें कृतिका खुराना की तो उन्होंने सब को पीछे छोड़ दिया है. भारत में एक पोस्ट के लिए विराट कोहली सब से ज्यादा, उस के बाद प्रियंका चोपड़ा, फिर एक ट्रैवलर का नाम है जो है कृतिका खुराना. कृतिका खुराना एक मौडल और ब्लौगर है जो फैशन, ब्यूटी पर लिखती है.

चंडीगढ़ की रहने वाली कृतिका खुराना 'द बोहो गर्ल' के नाम से इंस्टाग्राम पेज चलाती है और उस का यूट्यूब अकाउंट भी है. कृतिका के इंस्टाग्राम पर 8 लाख 48 हजार फौलोअर्स हैं. कृतिका इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट के लिए 3.75 लाख रुपए चार्ज करती है, जो काफी ज्यादा है. वहीं एक वीडियो के जरिए कृतिका को 1-3 लाख रुपए तक कमाई होती है. जबकि उस की नैटवर्थ 15 करोड़ रुपए के करीब है.

बिल्ली मौसी कपिला

सोशल मीडिया इंफ्लुएंसर और ऐक्ट्रैस कुशा कपिला अपने किरदार बिल्ली मौसी के लिए काफी जानी जाती है. कुशा कपिला की नैटवर्थ 20 करोड़ रुपए से अधिक है.

आएदिन देखा जाता है कि कुशा अपने सोशल मीडिया पोस्ट की वजह से चर्चा का विषय बनती है. अभी कुछ समय पहले ही कुशा ने अपने औफिशियल इंस्टाग्राम हैंडल पर लैटेस्ट तसवीरों को शेयर किया था जो उस के वैकेशन के दौरान की थीं.

समर सीजन में वह पिंक कलर की बिकिनी में बेहद हौट लग रही थी. एक रिजौर्ट पर उस ने बिकिनी में तरहतरह के पोज दिए, जो उस की हौटनैस को और बढ़ा रहे थे. बहुत कम बार देखा गया है कि कुशा कपिला बिकिनी अवतार में दिखी लेकिन अब जब वह इस अंदाज में नजर आई है तो फैंस उस की तुलना गौर्जियस ऐक्ट्रैस दिशा पाटनी से करने लगे हैं.

अब तो आप समझ ही गए होंगे कि ये इंस्टाग्राम मौडल्स किसी बड़ी सैलिब्रिटीज से कम नहीं हैं. ऐसा इसलिए क्योंकि इन के नखरे और अदाएं किसी बौलीवुड स्टार से कम नहीं हैं. फिर ऐसे में आम लड़के कहां इन में अपनी वही पुरानी स्कूलकालेज की गर्लफ्रैंड को ढूंढ़ रहे हैं.

भई, इस सच को जितनी जल्दी हो सके स्वीकार कर लें कि वे आप की लाइफ से बहुत आगे निकल चुकी हैं. उन की छोड़ें, आप भी उन के साथ अब कन्फर्टेबल नहीं हो पाएंगे. उन की बराबरी करतेकरते आप की आधी जिंदगी निकल जाएगी या फिर, अगर गर्लफ्रैंड इंस्टाग्राम मौडल बन गई है तो बौयफ्रैंड को अपने लिए इंस्टाग्राम में कोई जगह बनानी पड़ेगी. उसे भी इन्फ्लुएंसर बनना पड़ेगा. आप बढ़िया इन्फ्लुएंसर बन जाइए या फिर आप को भी मौडल बनना पड़ेगा. लेकिन ये सब करना आसान होता तो आप को सोचना न पड़ता बल्कि आप कर चुके होते.

इस बात को मान लें कि वह देखने में सुंदर है, काफी बोल्ड है. उस के पीछे अमीर लड़कों की लाइन लगी होगी. उस इन्फ्लुएंसर्स की फोटो के नीचे हजारों कमैंट आ रहे हैं. उस में से 100 कमैंट हैंडसम लड़कों या उसी की तरह के इन्फ्लुएंसर्स के आ रहे हैं कि 'तुम हौट दिख रही हो', 'तुम सुंदर लग रही हो' तो समझो आप का पत्ता कट गया. सो, इसे जितनी जल्दी हो सके स्वीकार कर लो वरना बाद में पछताना ही पड़ेगा. ●

मौडल लव लैटर्स

मोहब्बत और बगावत का शायर कैफी आजमी

लेख • रोहित

कैफी आजमी भारत के शानदार शायरों में से एक रहे हैं. उन की शायरी एक तरफ बगावती तेवर वाली थी तो वहीं इश्कजादा भी, ठीक उसी तरह जैसे शौकत आजमी के साथ उन का प्यार और बाकी जिंदगी.

फरवरी 1947. हैदराबाद में प्रोग्रैसिव राइटर्स का एक सम्मेलन चल रहा था, जिस में मशहूर शायर कैफी आजमी और मजरूह सुल्तानपुरी मुख्य अतिथि थे. तब शौकत, जो बाद में कैफी आजमी की हमसफर बनीं, अपनी बहन से मिलने हैदराबाद पहुंची थीं. यह कारण भी था कि उन्हें इस सम्मेलन में भाग लेने और उन प्रोग्रैसिव राइटर्स से मिलने का मौका मिल पाया था, जिन के बारे में काफीकुछ सुन चुकी थीं.

उन दिनों हैदराबाद में यह आम था कि थोड़ी सी शोहरत पाने वाले उर्दू के लेखक दूसरों को कमतर समझने लगते थे. लेकिन ऐसा इस मंच से जुड़े लेखकों के साथ नहीं था.

एक मुशायरा हुआ. शौकत अपने बड़े भाई के साथ पहली पंक्ति में बैठी थीं. माहौल में उत्सुकताभरी खामोशी थी. इस शाम के लिए शौकत ने काफी तैयारी की थी. उन्होंने अपनी पूरी अलमारी खंगाल डाली थी. पहनने के लिए उन्होंने सफेद कर्गाह का कुरता, सफेद सलवार, इंद्रधनुषी रंगों में रंगा हुआ दुपट्टा और सुनहरी सलीमशाही जूतियां चुनीं थीं. हर लड़की की तरह उन का इरादा था कि वे वहां मौजूद सभी लड़कियों से ज्यादा खूबसूरत दिखें.

जब कैफी ने अपनी कविता 'ताज' सुनानी शुरू की तो सब का ध्यान उन की ओर खिंच गया. कैफी तब 21 साल के थे. लंबे, दुबले और बेहद खूबसूरत. काले घने बाल उन के चेहरे पर लहरा रहे थे. उन की आवाज मानो गरजते बादलों की तरह पूरे सैमिनार में गूंजने लगी. यही वह पल था जब उन्होंने बिना डरे हैदराबाद के निजाम के शासन और अन्याय के खिलाफ अपनी कविता सुनाई और शौकत उसी दौरान उन्हें अपना दिल दे बैठीं. वे शौकत जिन की सगाई लगभग तय हो चुकी थी और जिन्होंने कैफी से शादी करने के लिए घर में बगावत कर डाली.

फाइनैंशियली स्ट्रॉंग और वैल कल्चर्ड फैमिली वाली शौकत को कैफी की राइटिंग्स ने खासा प्रभावित किया. मई 1947 में दोनों ने शादी की. बताते हैं कि शादी के बाद शौकत ने रिश्ते की गरिमा इस हद तक निभाई कि खेतवाड़ी में पति के साथ ऐसी जगह रहीं जहां बाथरूम तक कौमन थे. यहीं पर भारतीय सिनेमा की संजीदा और खूबसूरत अदाकारा शबाना आजमी का जन्म हुआ.

कहते हैं उर्दू होंठों से जरूर कही जाती है मगर निकलती दिल से है. दिल से निकली बात सीधे वार करती है. शायद यही कारण भी था कि उर्दू के बड़े शायर कैफी आजमी शुरुआत से ले कर अंत तक प्रगतिशील लोगों के बीच बराबर चर्चा में बने रहे. वे भारतीय जन रंगमंच संघ (इप्टा) से भी जुड़े रहे. यहां तक कि इप्टा की पहली महाविद्यालय नाट्य प्रतियोगिता की शुरुआत कैफी आजमी ने ही की. कैफी आजमी नास्तिक थे. उन का नाम मखदूम, फैज, फिराक गोरखपुरी, जोश, मजरूह सुल्तानपुरी और जिगर के साथ लिया जाता रहा है. वे आजीवन सामाजिक कार्यकर्ता रहे.

कैफी आजमी का साल 2002 में देहांत हुआ. लेकिन उन के लिखे तराने आज भी गुनगुनाए जाते हैं जिन में, 'तुम जो मिल गए हो', 'तुम इतना जो मुसकरा रहे हो', 'वक्त ने किया क्या हसीन सितम' जैसे ढेरों हैं. उन की कई ऐसी शायरियां हैं जो सांप्रदायिक राजनीति और शोषण के विरोध में हैं. उन्हीं के नाम पर दिल्ली से आजमगढ़ तक चलने वाली कैफियत एक्सप्रैस ट्रेन चलती है.

उन की लिखी शायरियां आज की इंस्टाग्राम और फेसबुक वाली जैनरेशन यहांवहां ठेलती तो रहती है पर जो उन्हें समझने और उस जैसा लिख पाने के लिए समझ चाहिए वैसी युवाओं के पास है नहीं. युवा न पढ़ते हैं न पढ़ा हुआ समझ पा रहे हैं.

16 सैकंड की रील्स की तरह ही आज युवाओं की समझ16 सैकंड तक सीमित रह गई है. गंभीर मुद्दे तो छोड़िए, न प्यार की भाषा समझ पा रहे, न एक्सप्रैस कर पा रहे हैं क्योंकि शब्दों की भारी कमी है. जेनजी युवाओं को अपने भावों को कैसे जाहिर करना है, इसे जानने के लिए कैफी आजमी का पत्र जरूर पढ़ना चाहिए जो उन्होंने अपनी होने वाली पत्नी शौकत आजमी को लिखा था. ●

21 मार्च, रात, 1 बजे

तुम्हें लिखने के बाद मैं ने लिफाफा सील किया और सोने की कोशिश की, लेकिन नींद नहीं आई. सील खोल कर मैं ने तुम्हारा खत दोबारा पढ़ा और अपने आंसू रोक नहीं पाया. शौकत, यह मेरा दुर्भाग्य है कि तुम्हें मुझ पर और मेरे प्रेम पर विश्वास नहीं है. कई दिनों से मैं बस यही सोचता रहा हूं कि तुम्हें कैसे यकीन दिलाऊं कि मैं तुम से प्रेम करता हूं. महीनों तक मैं ने हमारे प्रेम के लिए आंसू बहाए हैं और अब मैं अपना खून बहा रहा हूं. मुझे नहीं पता कि हमारे भविष्य में क्या लिखा है.

मैं बहुत आहत हूं. तुम ने कैसे लिख दिया, शौकत अपने शब्दों को वापस ले लो और मेरे प्रेम का मजाक मत बनाओ. अगर तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकतीं तो ठीक है. जब मैं ने तुम से प्रेम करना शुरू किया, तभी मुझे पता था कि यह आशाविहीन है. तुम मेरे प्रेम और तुम से विवाह की मेरी मंशा पर सवाल उठाती हो. मैं बस इतना कह सकता हूं कि एक दिन मैं तुम्हें अपने प्रेम का प्रमाण दूंगा.

मेरी शौकत, मेरे और मेरे प्रेम का क्या होगा? हम एकदूसरे से इतनी दूर हैं कि तुम्हारे लिए मेरे दर्द को देख पाना असंभव है. तुम दूसरों की बातों पर यकीन कर लेती हो, बिना मेरी मजबूरियों को समझने की कोशिश किए. अगर मैं ने कुछ ऐसा कहा है जिस से तुम्हें ठेस पहुंची हो तो मुझे माफ कर दो.

तुम्हारे लिए ढेर सारा प्यार,
तुम्हारा,
कैफी

मुक्त विचार

संपादकीय

जय हो सोशल मीडिया

इन्फ्लुएंसर्स आजकल नाचगाना, फालतू के स्टंट के रील्स बना व उन्हें सोशल मीडिया पर डालडाल कर आम लोगों को इस तरह हिप्टोनाइज कर चुके हैं कि अब सही और गलत की पहचान के लिए स्क्रीन पर दिखने वाला ही परफैक्ट लगता है. सोशल मीडिया पर इंस्टाग्राम, फेसबुक रील्स, व्हाट्सऐप रील्स, यूट्यूब कार्टून इतने हावी हो गए हैं कि देखने वालों की रैशनल कैपेसिटी ही खत्म हो गई है.

इस का फायदा इन्फ्लुएंसर्स उठा ही रहे हैं, लोगों को फालतू की चीजें बेच कर, फालतू की जगहों पर ले जा कर, फालतू का बेकार का खाना खिला कर उन्हें वे लूटे जाने के लिए भी तैयार कर लेते हैं. जैसे धर्मवाले चमत्कारों की, भावनाओं की कहानियां सुनासुना कर उत्तेजित कर लेते हैं कि भक्तों को आज भी भगवान गड़ा हुआ सोना दिलवा सकते हैं, मनचाही लड़की कदमों में ला पटक सकते हैं, वैसे ही अब कुछ इन्फ्लुएंसर्स अपने भक्तों व फौलोअर्स के साथ कर रहे हैं.

ये इन्फ्लुएंसर्स अब फाइनैंशियल ज्ञान भी मुफ्त में बांट रहे हैं. ये शेयर बाजार की बारीकियां भी बता रहे हैं. बैंक की 7–8 फीसदी की एफडी के चक्कर में न पड़ो, स्टौक मार्केट में जाओ, 15 से 20 फीसदी रिटर्न मिलना पक्का है. आईपीओ में इनवैस्ट करो, 30–40 फीसदी लाभ मिल सकता है. डिजिटल कौइन में लगाओ, 10 वर्षों में 20 हजार गुना तक कमा सकते हो. भरोसा न हो तो व्हाट्सऐप ग्रुप में जुड़ो, लोगों के बैंकों के खातों पर नजर डालो. कैसे पैसे मिलते नहीं, टपकते हैं. स्क्रीन कह रही है, तो सही ही होगा. वेद, पुराण, कुरान, बाइबिल में लिखा है तो सही ही है न, तो हमारी बात भी मान लो. स्क्रीन गलत नहीं होती. और फिर, आप स्क्रीन के अलावा कुछ पढ़तेलिखते तो हो ही नहीं कि आप को कहीं और से ज्ञान मिलेगा.

एक चीनी नागरिक फैंग चेनजिन तक ने इस गोरखधंधे में हाथ डाला और 100 करोड़ रुपए से ज्यादा ठग लिए. उसे एक शिकायत पर गिरफ्तार किया गया. शिकायत करने वाला इंटेलिजैंट पंडित सुरेश कोलिचियिल अचुथन एक कंपनी में अकाउंटेंट है और वह सोशल मीडिया खंगालता रहता था ताकि कहीं से एक के चार करने का फार्मूला स्क्रीन से बाहर निकल आए. एक व्हाट्सऐप ग्रुप का इनवाइट आया कि 'इस में जुड़ें और लाखों कमाएं.' अकाउंट जानने वाले पर चमत्कारों के इन्फ्लूएंसों में गले तक डूबे साहब ने थोड़े से पैसे लगाए. जब वे पैसे एक ऐप में दोगुने, चारगुने होने लगे तो उन्होंने 43.50 लाख रुपए तक जमा कर डाले. ऐप उस समय उस के खाते में 2.20 करोड़ रुपए का बैलेंस दिखा रहा था. वाह, क्या चमत्कार है!

बंद दिमाग वाले पंडित सुरेश कोलिचियिल अचुथन को समझ नहीं आया कि इतना पैसा किस ने, कैसे कमा कर उसे बैठेबिठाए दे दिया होगा. इस में से थोड़ा सा पैसा निकालना चाहा तो ऐप कहने लगा कि कुछ और जमा कराओ तो ही निकाल सकते हो. तब इंफ्लुएंसर्स के विक्टिम्स रोतेधोते पुलिस स्टेशन गए. पुलिस ने फेंग चेनजिन को पकड़ लिया है पर दोषी वही ही है, यह बाद में पता चलेगा, 4–5 साल बाद. तब तक मामला ठंडा पड़ जाएगा. 100 करोड़ रुपए जमा करने वाले ऊपर वाले की स्क्रीन की मरजी के आगे घुटने टेक चुके होंगे.

यह नौटंकी हर स्क्रीन पर चल रही है. कई लोग इसे हलके में लेते हैं, कई लोग इस में कही गई बातों को मान लेते हैं. पर जो देख रहा है, लगातार देख रहा है, वह फंस रहा है. वह क्योरियस ही नहीं है, वह स्क्रीनभक्त है. अंधभक्त है. वह व्हाट्सऐप यूनिवर्सिटी का सुपरग्रेजुएट है. आयुर्वेद, होम्योपैथी, नैचुरोपैथी, हिप्टोनिज्म, डांस, स्लैंग, बुलडोजर सब का दीवाना है वह. उस में रत्तीभर एनालिटिकल पावर नहीं है. वह तो कंम्पलेंट तक नहीं लिख सकता. सोशल मीडिया पर सुन और देख कर वह सिर्फ शिकायत के वीडियो या औडियो बना सकता है. इस चक्कर में वह जहां भी ब्रिकमोर्टार बिल्डिंग में काम कर रहा है, वहां की कमाई को गंवा रहा है. जय हो इस सोशल मीडिया की.

सोशल मीडिया : पे फौर गुड इन्फो

सोशल मीडिया पर मिसइन्फौर्मेशन और डिसइन्फौर्मेशन को कंट्रोल करने के बहाने दुनिया के कई देश सोशल मीडिया के बहाने ट्रेडिशनल मीडिया पर चैकिंग स्टाफ बैठाने की स्कीमें बना रहे हैं. लोगों को गुमराह न किया जाए, कह कर वे चाहते हैं कि सरकार, नेताओं, प्रेसिडेंटों, प्राइममिनिस्टरों, गवर्नरों, मेयरों, पुलिस अफसरों की पोल सोशल मीडिया या ट्रेडिशनल मीडिया पर न आए ताकि वे गुनाहगार, जो अपने पावर का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं, मौज से जी सकें.

आस्ट्रेलिया में सितंबर में इसी तरह के लाए गए एक बिल को कानून बनने से पहले ही वापस लेने का फैसला किया गया है. भारत में ब्रौडकास्टिंग बिल जून 2024 के चुनावों के बाद वापस ले लिया गया था पर शायद अब हरियाणा और महाराष्ट्र में भाजपा की जीत के बाद फिर लाया जाएगा.

सोशल मीडिया बेहद गैरजिम्मेदार है, इस में शक नहीं है. इस पर लोग हर तरह की गंद डाल सकते हैं, जो कुछ सौ से ले कर लाखों लोगों तक पहुंच सकती है. जिन लोगों को धर्म के तथाकथित चमत्कारों की झूठी कहानियों की आदत पड़ी है वे आमतौर पर इस तरह की अफवाहों/खबरों को मोबाइलों पर ठाट से पढ़ते हैं और फिर उन्हें दैविक, गोस्पल वर्ड्स मान कर सच मान लेते हैं.

इन पर कंट्रोल करना चाहिए पर सरकार अगर कंट्रोल करेगी तो पक्का है कि उस का इंट्रैस्ट अपने बारे में डिसइन्फौर्मेशन ज्यादा परोसना होगा. भारत में देख लें, जितने सरकारी विज्ञापन छपते हैं उन में आधे तो नकली खबरों से भरे होते हैं.

सोशल मीडिया पर कंट्रोल करने की मंशा है तो एक ही तरीका है. इसे महंगा किया जाए. अब यह काम कौन करेगा, यह नहीं कहा जा सकता. जिम्मेदार एडवर्टाइजर्स का काम है कि वे मुफ्त में मीडिया कन्ज्यूम करने वालों के यहां एडवर्टाइज न करें तो मिसइन्फौर्मेशन पर कंट्रोल होगा.

सोशल मीडिया यूजर्स अपने छोटेछोटे एसोसिएशन बना सकते हैं और ये चाहे सैकड़ों की तादाद में बनें. हर एसोसिएशन यदि सोशल मीडिया कंटैंट का रिव्यू करेगा तो इस पर कंट्रोल होगा.

सब से बड़ी बात यह है कि सोशल मीडिया यूज करने वाले समझें कि कोई भी कोई रील मुफ्त में बना कर नहीं डालेगा. सिर्फ फौलो, लाइक और सब्सक्राइब करने से रील बनाने वाले का पेट नहीं भरता. हर सोशल मीडिया उस रील को देखे जिस की कुछ कीमत हो.

सही व अच्छी जानकारी तो पे (भुगतान) करने के बाद मिलेगी यानी पे फौर गुड इन्फो. आजकल तो एक घूंट पानी भी मुफ्त में नहीं मिलता, कैसे, एंटरटेनमैंट मुफ्त में मिल सकता है? ●

लेख • शिखा जैन

कहां गायब हो गए स्टूडैंट मूवमैंट

आजादी से पहले और बाद में भारत में जितने भी सोशल मूवमैंट हुए, उन में स्टूडैंट्स की भूमिका बहुत अहम रही है फिर चाहे वह नवर्निर्माण मूवमैंट हो, बिहार स्टूडैंट मूवमैंट हो, असम मूवमैंट हो या फिर रोहित वेमुला की मौत पर विरोध प्रदर्शन. लेकिन अब ये स्टूडैंट मूवमैंट गायब होने लगे हैं.

एक समय था जब स्टूडैंट मूवमैंट अच्छीखासी संख्या में हुआ करते थे. इमरजैंसी में विरोध के बाद जवाहर लाल नेहरू यूनिवर्सिटी में स्टूडैंट्स ने इमरजैंसी के खिलाफ मूवमैंट किया. इस मूवमैंट ने इतना बड़ा रूप ले लिया था कि इंदिरा गांधी तक को स्टूडैंट्स के प्रेसिडैंट तक से मिलना पड़ गया था क्योंकि उस समय स्टूडैंट प्रेजिडैंट की एक वैल्यू होती थी.

दरअसल स्टूडैंट सिर्फ एक स्टूडैंट नहीं है वह एक नागरिक है और देश की रीढ़ भी है. अगर उसे अपनी यूनिवर्सिटी में या शिक्षा के क्षेत्र में या फिर देश में कुछ भी गड़बड़ होते दिख रहा है या उसे लगता है कि ये गलत हो रहा है इसे बदला जाना चाहिए तो इस पर स्टूडैंट्स को सवाल उठाने का पूरा अधिकार होता है.

स्टूडैंट अगर किसी यूनिवर्सिटी कैंपस में पढ़ाई कर रहा है तो इस का मतलब यह नहीं है कि वह वहां सिर्फ पढ़ाई ही करेगा. अगर उसे लग रहा है कि इस यूनिवर्सिटी में किसी स्टूडैंट के साथ कुछ गलत हो रहा है या वहां कुछ ऐसा हो रहा है जो स्टूडैंट्स के फेवर में नहीं है तो उन्हें आवाज उठाने का पूरा हक है. अपने इसी हक का इस्तेमाल करते हुए पहले खूब स्टूडैंट मूवमैंट हुआ करते थे.

2012 में निर्भया केस हुआ. उस निर्भया केस को पूरे भारत में इतना स्पार्क मिला. उस का एक बड़ा कारण यह था कि दिल्ली के अलगअलग यूनिवर्सिटी के जो स्टूडैंट थे वे बाहर निकले और उन्होंने मूवमैंट किया, आवाज उठाई. उस में जामिया, अंबेडकर यूनिवर्सिटी, आईपी यूनिवर्सिटी के स्टूडैंट भी शामिल थे. वे सभी सड़कों पर आए और उन्होंने अपनी आवाज उठाई. इस तरह स्टूडैंट एक नागरिक भी है और वह अपना इस तरह फर्ज भी अदा करता है.

बहुत पुराना है स्टूडैंट मूवमैंट का इतिहास

जब भी स्टूडैंट शक्ति ने किसी बड़े मूवमैंट को जन्म दिया या किसी घटना विशेष पर तीखा रुख इख्तियार किया तो देश और समाज में सकारात्मक परिवर्तन हुए. देश ही नहीं दुनिया में भी स्टूडैंट राजनीति का आयाम यही रहा. भारत में स्टूडैंट राजनीति का इतिहास करीब 170 साल पुराना है. 1848 में दादा भाई नौरोजी ने 'द स्टूडैंट साइंटिफिक एंड हिस्टोरिक सोसाइटी' की स्थापना की.

इस मंच को भारत में स्टूडैंट मूवमैंट का सूत्रधार माना जाता है. आजादी से पहले के राजनेताओं की बात करें तो युवा शक्ति को पहचानते हुए लाला लाजपत राय, भगत सिंह, सुभाष चंद्र बोस, जवाहरलाल नेहरू ने भी स्टूडैंट राजनीति को काफी तवज्जो दी थी

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी का भी स्टूडैंट आंदोलनों को एक मुकाम तक ले जाने में खासा योगदान रहा. 1919 का सत्याग्रह, 1931 में सविनय अवज्ञा और 1942 में अंग्रेजो भारत छोड़ो मूवमैंट की शुरुआत जब हुई तो युवाओं और खासकर स्टूडैंट्स को इस से जोड़ा गया. गुजरात विद्यापीठ, काशी विद्यापीठ, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, विश्वभारती, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और जामिया मिलिया इस्लामिया जैसे शिक्षा केंद्र विद्यार्थी आंदोलनों का गढ़ बन गए थे. वहां खूब आंदोलनों का दौर चला.

1974 का जयप्रकाश नारायण का मूवमैंट एक मिसाल है

स्टूडैंट मूवमैंट से जुड़ा एक ऐसा ही किस्सा है 18 मार्च 1974 का. अगर उस दिन की बात करें तो 18 मार्च के दिन विधान मंडल के सत्र की शुरुआत होने वाली थी. राज्यपाल दोनों सदनों की संयुक्त बैठक को संबोधित करने वाले थे, लेकिन ऐसा करना उन के लिए आसान नहीं था क्योंकि दूसरी तरफ स्टूडैंट मूवमैंटकारी डटे हुए थे और उन की कोशिश इस बैठक को नाकाम करने की थी. उन की योजना थी कि राज्यपाल को विधान मंडल भवन में जाने से रोकेंगे. उन्होंने राज्यपाल की गाड़ी को रास्ते में ही रोक लिया.

पुलिस प्रशासन ने उन्हें रोकने की कोशिश की और पुलिस ने स्टूडैंट्स युवकों पर अंधाधुंध लाठियां चलाईं तब स्टूडैंट्स और युवकों का नेतृत्व करने वालों में पटना विश्वविद्यालय स्टूडैंट संघ के तत्कालीन अध्यक्ष लालू प्रसाद यादव सहित कई लोग जुटे थे. इस में कई लोगों को चोटें आईं. वहीं, पुलिस के लाठी चार्ज से लोगों में गुस्सा फैल गया. बेकाबू भीड़ को काबू करना मुश्किल हो गया था. आंसू गैस के गोले चलाए गए जिस से हर तरफ धुआं का माहौल हो गया. इस के बाद अनियंत्रित भीड़ और अराजक तत्त्व मूवमैंट में घुस गए, स्टूडैंट नेता कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे थे. हर तरफ लूटपाट और आगजनी होने लगी. बताते हैं कि इस घटना में कई स्टूडैंट मारे गए और फिर इस मूवमैंट की कमान जेपी ने संभाली.

उस समय इस मूवमैंट को रोकने में कांग्रेस सरकार पूरी तरह नाकाम रही तभी तात्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की थी. लेकिन सालभर बाद ही हुए चुनाव में कांग्रेस सरकार सत्ता से हाथ धो बैठी. इस तरह उस समय के स्टूडैंट्स युवकों ने राजनीति में बढ़ते भ्रष्टाचार पर लगाम कसी थी.

इस तरह देश में आजादी से पहले गांधी, सुभाष चंद्र बोस और फिर बाद में जय प्रकाश नारायण के आह्वान पर स्टूडैंट शक्ति ने जो तेवर दिखाए, उस ने देश की दशादिशा बदल दी. 1960 से 1980 के बीच देश में विभिन्न मुद्दों पर सत्ता को चुनौती देने वाले ज्यादातर युवा आंदोलनों की अगुआई स्टूडैंट संघों ने ही की. सात के दशक में (1974) में जेपी मूवमैंट और फिर असम स्टूडैंट्स का मूवमैंट इस के उदाहरण हैं, जिन के फलस्वरूप स्टूडैंट शक्ति सत्ता में भागीदार बनी. इस मूवमैंट ने देश को कई बड़े नेता दिए जैसे नीतीश कुमार, बिहार के पूर्व सीएम लालू प्रसाद, यूपी के पूर्व सीएम मुलायम सिंह यादव आदि.

1919 में, असहयोग मूवमैंट के दौरान स्कूलों और कालेजों का बहिष्कार कर भारतीय स्टूडैंट्स ने इस आंदोलन में तीव्रता प्रदान की थी. असहयोग मूवमैंट के बाद, भारत छोड़ो मूवमैंट को भारतीय स्टूडैंट्स का समर्थन मिला. मूवमैंट के दौरान, स्टूडैंट्स ने ज्यादातर कालेजों को बंद करने और नेतृत्व की अधिकांश जिम्मेदारियों को शामिल करने का प्रबंधन किया और भूमिगत नेताओं और मूवमैंट के बीच लिंक प्रदान किया.

आपातकाल में स्टूडैंट मूवमैंट, 1975

25 जून, 1975 को देशभर में आपातकाल घोषित कर दिया गया. भारत भर के कई विश्वविद्यालयों और शैक्षणिक संस्थानों में स्टूडैंट्स और संकाय सदस्यों ने आपातकाल लागू करने का जम कर विरोध किया. इस मूवमैंट की सफलता का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि खुद इंदिरा गांधी स्टूडैंट संघ के प्रैसिडैंट से मिलने आई थीं. इस मूवमैंट में दिल्ली विश्वविद्यालय स्टूडैंट संघ के

अध्यक्ष अरुण जेटली समेत 300 से अधिक स्टूडैंट संघ नेताओं को जेल भेज दिया गया था.

मंडल विरोधी मूवमैंट, 1990

अगस्त 1990 में भारत भर के स्टूडैंट्स ने अन्य पिछड़ा वर्ग के लोगों के लिए सरकारी नौकरियों में 27 प्रतिशत आरक्षण की शुरुआत के खिलाफ विरोध किया. यह विरोध दिल्ली विश्वविद्यालय से शुरू हुआ और पूरे देश में फैल गया. स्टूडैंट्स ने परीक्षाओं का बहिष्कार किया. इसके बाद ही वीपी सिंह ने 7 नवंबर, 1990 को इस्तीफा दिया तो ये मूवमैंट समाप्त हो गया.

आरक्षण विरोधी मूवमैंट, 2006

यह स्टूडैंट्स के द्वारा किया गया दूसरा सब से बड़ा मूवमैंट था जोकि आरक्षण व्यवस्था के खिलाफ किया गया था.

2015 का एफटीआईआई मूवमैंट

8 जुलाई, 2015 में भारतीय फिल्म और टैलीविजन संस्थान पुणे के स्टूडैंट्स ने प्रतिष्ठित संस्थान के अध्यक्ष के रूप में अभिनेता गजेंद्र चौहान के खिलाफ मूवमैंट किया था. उन्होंने इन की योग्यता पर सवाल उठाते हुए इन के विरोध में न सिर्फ अपनी क्लास अटैंड करने से मना किया बल्कि पेपर भी नहीं दिए.

रोहित वेमुला की मौत पर स्टूडैंट्स का विरोध प्रदर्शन, 2016

26 साल के रोहित वेमुला ने 17 जनवरी, 2016 को हैदराबाद यूनिवर्सिटी के होस्टल में खुदकुशी की थी. अंबेडकर छात्र संघ के मैंबर रहे रोहित वेमुला छात्र राजनीति में काफी सक्रिय थे. उन के संगठन ने याकूब मेमन की फांसी का विरोध किया था. 2015 में रोहित समेत 5 स्टूडैंट्स पर एबीवीपी के सदस्य पर हमला करने के आरोप लगे थे.

उन्हें होस्टल से निकाल दिया गया था. इस के बाद रोहित वेमुला की आत्महत्या की खबर आई. रोहित की मौत के बाद कुलपति अप्पा राव, महिला एवं बाल विकास मंत्री स्मृति ईरानी, सांसद बंगारू दत्तात्रेय समेत एबीवीपी के कई नेताओं पर खुदकुशी के लिए उकसाने के आरोप लगे. फिर जेएनयू समेत पूरे देश की यूनिवर्सिटीज में विरोध प्रदर्शन हुए थे. सैकड़ों स्टूडैंट्स ने विरोध रैलियों में भाग लिया था. रोहित वेमुला को न्याय दिलाने की मांग कर रहे कांग्रेस और वामपंथी स्टूडैंट संगठनों ने 'राष्ट्रवादी दहशत' को आत्महत्या का कारण बताया. रोहित के समर्थन और हैदराबाद यूनिवर्सिटी की कार्यशैली के विरोध में दर्जनों लेख लिखे गए. सीएम केसीआर ने इस केस की जांच हैदराबाद पुलिस को सौंप दी.

जेएनयू फीस वृद्धि, 2019 और सीएए-एनआरसी

जेएनयू में फीस वृद्धि को ले कर चल रहे स्टूडैंट्स के प्रदर्शन ने खूब जोर पकड़ा. इस मूवमैंट में उन की पुलिस के साथ झड़प भी हुई. इस के बाद कई छात्राओं ने कहा कि अगर फीस वृद्धि हुई तो वे अपने घर वापस लौट जाएंगी. विरोध इतना हुआ और स्थिति इतनी बिगड़ गई कि 500 पुलिसकर्मियों को स्थिति संभालने में लगाया गया.

ऐसे ही सीएए-एनआरसी के खिलाफ स्टूडैंट्स ने जम कर विरोध प्रदर्शन किया था. इस में जामिया मिलिया इस्लामिया से ले कर अलीगढ़ मुसलिम यूनिवर्सिटी के स्टूडैंट शामिल हुए थे.

स्टूडैंट नेताओं ने कुछ ऐसे रखा राजनीति में कदम

यही वह समय था जब भारत में स्टूडैंट मूवमैंट ढेरों की संख्या में होते थे और वहीं से नेता बनते थे. स्टूडैंट राजनीति से निकल कर राष्ट्रीय राजनीति में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले नेताओं में पूर्व राष्ट्रपति डा. जाकिर हुसैन, पूर्व प्रधानमंत्री वीपी सिंह और चंद्रशेखर जैसे दिग्गजों के नाम भी हैं. वहीं, हेमवती नंदन बहुगुणा, लालू प्रसाद यादव, नीतीश कुमार, ममता बनर्जी, अशोक गहलोत, प्रफुल्ल कुमार महंत सहित शरद यादव, सुशील मोदी, अमित शाह, सुषमा स्वराज, अरुण जेटली, रविशंकर प्रसाद, सीताराम येचुरी, प्रकाश करात,

डी. राजा, सतपाल मलिक, सीपी जोशी, मनोज सिन्हा, विजय गोयल, विजेंद्र गुप्ता, अनुराग ठाकुर, देवेंद्र फड़नवीस, सर्वानंद सोनोवाल जैसे नाम हैं. इन की शुरुआत राजनीति में स्टूडैंट मूवमैंट से ही निकली थी. उन में से कुछ नेता हैं–

सुषमा स्वराज

1970 के दशक में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) के साथ हरियाणा में राजनीतिक कैरियर की शुरुआत की. पेशे से वकील 25 वर्ष की उम्र में हरियाणा में मंत्री बनीं. 1990 में वे पहली बार राज्य सभा सदस्य बनीं. उन्होंने 1996 में दक्षिण दिल्ली से लोकसभा सीट जीती. उस के बाद दिल्ली की मुख्यमंत्री, केंद्र में सूचना प्रसारण मंत्री, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री, लोक सभा में विपक्ष की नेता और सरकार में विदेश मंत्री भी रहीं.

लालू प्रसाद यादव

पटना यूनिवर्सिटी से वकालत की पढ़ाई करते हुए पटना यूनिवर्सिटी स्टूडैंट्स यूनियन के अध्यक्ष बने. 1973 में फिर स्टूडैंट संघ चुनाव लड़ने के लिए पटना लौ कालेज में दाखिला लिया और जीते. जेपी मूवमैंट से जुड़े और स्टूडैंट संघर्ष समिति के अध्यक्ष बनाए गए. 1977 में जनता पार्टी के टिकट पर लोकसभा चुनाव जीते. 29 साल के लालू यादव सब से युवा सांसदों में से एक थे. 1990-97 के बीच लालू बिहार के मुख्यमंत्री रहे. यूपीए-1 सरकार में रेल मंत्री भी रहे.

सीपी जोशी

1973 में राजस्थान के मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के स्टूडैंट संघ के अध्यक्ष बने. इस के बाद विधायक का चुनाव जीता. 4 बार विधायक बने और राज्य सरकार में कई मंत्रालय संभाले. 2008 के चुनाव में नाथद्वारा से एक वोट से हारे. 2009 में भीलवाड़ा लोकसभा सीट से जीत कर पहली बार सांसद बने. तत्कालीन संप्रग सरकार में ग्रामीण विकास और पंचायती राज मंत्री बने.

ममता बनर्जी

1970 में कोलकाता में कांग्रेस के स्टूडैंट संगठन, 'स्टूडैंट परिषद' के साथ जुड़ीं और तेजतर्रार महिला नेता के तौर पर उभरीं. उन्होंने लोकसभा सीट से पहली बार चुनाव लड़ा और दिग्गज वाम नेता सोमनाथ चटर्जी को हराया.

एबीवीपी में स्टेट वर्किंग कमेटी मैंबर और लौ स्टूडैंट –अंकित भारद्वाज

स्टूडैंट मूवमैंट तो अभी भी होते हैं लेकिन मीडिया उसे पूरा कवर नहीं करती है. मीडिया का ज्यादा झुकाव इस तरफ रहता है कि प्रधानमंत्री आज किस विदेश यात्रा पर हैं? आज प्रधानमंत्री ने अपने मन की बात में क्या कहा? वे लोग इस की कवरेज ज्यादा करते हैं. वहीं पहले अगर डूसू के चुनाव होने वाले होते थे तो कई दिन पहले से इस पर न्यूज में चर्चा होनी शुरु हो जाती थी लेकिन अभी हाल ही में डूसू चुनाव का रिजल्ट आया तो न्यूज में इस खबर को सिर्फ 5 मिनट की कवरेज मिली.

कालेज में जो नई जनरेशन आई है वह इलैक्शन में बिलकुल भी इंट्रैस्ट नहीं ले रही है. अभी डीयू में जो इलैक्शन हुआ उस में सर्वे हुआ था जिस में 25 परसैंट स्टूडैंट ऐसे थे जिन्हें यह तक नहीं पता था कि हमारे प्रेजिडेंट कैंडिडेट कौनकौन से हैं? आज के टाइम में स्टूडैंट सिर्फ डिग्री के लिए कालेज की पढ़ाई कर रहे हैं और साइड में वह पीसीएस या फिर सीए की पढ़ाई कर रहें होते हैं इसलिए वे इलैक्शन में इंट्रैस्ट नहीं लेते हैं.

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी के कार्यकाल में 'पश्चिम बंगाल यूथ कांग्रेस' की अध्यक्ष और फिर नरसिंह राव की सरकार में मानव संसाधन मंत्री बनीं. 1997 में कांग्रेस से अलग हो कर अपनी पार्टी, 'औल इंडिया तृणमूल कांग्रेस' बनाई और 14 साल बाद, 2011 में पश्चिम बंगाल का चुनाव जीत कर मुख्यमंत्री बनीं.

अरुण जेटली

1974 में दिल्ली यूनिवर्सिटी स्टूडैंट्स यूनियन के अध्यक्ष बने. उसी दौर में जेपी मूवमैंट में स्टूडैंट और स्टूडैंट संगठनों की राष्ट्रीय समिति के अध्यक्ष बने.

सिर्फ यही नहीं बल्कि क्या आप जानते हैं वे वकील कैसे बने. आपातकाल में डेढ़ साल जेल में रहना पड़ा. जिस के बाद वकालत की पढ़ाई पूरी कर सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील बने.

एनडीए सरकार में कानून मंत्री बने, 5 साल तक भारतीय जनता पार्टी के महासचिव रहे और उस के बाद राज्य सभा में विपक्ष के नेता बने.

यूथ लीडर ही युवाओं की आवाज बन सकते हैं

इस तरह भारत में जितने भी बड़ेबड़े नेता बने हैं ये स्टूडैंट मूवमैंट से निकले हैं. लेकिन आज के टाइम में कोई स्टूडैंट मूवमैंट नहीं हो रहा है यानी कि स्टूडैंट मूवमैंट से कोई नेता पैदा नहीं हो रहा है तो अब जो नेता बन रहे हैं पैराशूट नेता हैं. जो अपने पिता के दम पर हैं. इस तरह के नेता पौलिटिक्स नहीं समझते, ग्राउंड नहीं समझते. पहले स्टूडैंट मूवमैंट का फायदा यही भी होता था कि इस से नेता डैवलप होते थे और देश को ऐसे नेताओं की जरूरत भी है.

लेकिन अब यूथ लीडर नहीं पैदा हो रहे. यूथ लीडर होगा तो वह युवाओं को समझेगा. उन की समस्याओं से रिलेट कर पाएगा. आज बेरोजगारी एक बड़ी समस्या है. लेकिन बेरोजगारी पर क्यों बात नहीं हो रही है क्योंकि कोई युवा नेता नहीं है. यूथ लीडर होता तो वह युवाओं की आवाज बनता.

सरकार अपना शिकंजा यूनिवर्सिटी पर कसे हुए है

लेकिन आप ने कभी सोचा है कि युवाओं की यह आवाज आखिर कहां चली गई? अब क्यों कोई मूवमैंट नहीं हो रहा? जबकि पहले मूवमैंट होते थे लेकिन अब धीरेधीरे कर के खत्म होते जा रहे हैं. पिछले 5 सालों में कोई भी मूवमैंट नहीं हुआ है. छोटेछोटे मूवमैंट होते रहे हैं लेकिन उन्हें दबाया जाता रहा है. सच तो यह है कि अब स्टूडैंट मूवमैंट गायब हो चुके हैं.

इस का एक कारण कालेज का माहौल भी है जो पहले से बहुत अधिक बदल गया है. साल 2011 के आसपास कालेज के बाहर पुलिस नहीं होती थी. पैट्रोलिंग नहीं होती थी. यूनिवर्सिटी के अंदर पुलिस की कोई जगह नहीं होती थी. गार्ड भी इतने नहीं होते थे. आज के टाइम पर अगर आप यूनिवर्सिटी में जाओगे और कालेज घूमोगे तो वहां बहुत ज्यादा पुलिस की रेकी चलती रहती है. अब वे उस का कारण कुछ भी बताए कि कहीं कुछ गड़बड़ न हो जाए हम इसलिए यहां पर हैं या फिर सुरक्षा व्यवस्था बनी रहे इसलिए यहां पर हैं.

उन का अपना रीजन हो सकता है लेकिन पहले पुलिस का इतना इन्वौल्वमैंट यूनिवर्सिटी में नहीं होता था. लेकिन अब पुलिस की गाड़ी वहां हर वक्त खड़ी रहती है. पुलिस के वहां होने का दूसरा कारण यह भी होता है कि पुलिस इन आंदोलनकारियों पर नजर भी रखती है. सिक्योरिटी को टाइट करना स्टूडैंट पौलिटिक्स को कम करना, ज्यादा आईडी चैक करना, ये सब प्रैशर बनाने के तरीके होते हैं.

इस का कारण यह है कि गवर्नमैंट अपना शिकंजा यूनिवर्सिटी पर कस रही है. 2019 के टाइम पर स्टूडैंट मूवमैंट हुए थे जब से एनआरसी का मुद्दा हुआ है. उस के बाद अब 5 साल हो गए हैं. इस दौरान कोई स्टूडैंट मूवमैंट डैवलप नहीं हो पाया. एक समय पर हर साल इस तरह के मूवमैंट हुआ करते थे. लेकिन अब एक पूरी सरकार निकल गई और कोई स्टूडैंट मूवमैंट नहीं हुआ.

कहीं न कहीं सरकार ने भी यूनिवर्सिटी में अपनी पकड़ बनाने की पूरी कोशिश की है. सरकार चाहती ही नहीं है कोई उन के कामकाज पर नजर रखे और उस के खिलाफ आवाज उठाए. इसलिए यूनिवर्सिटी के बाहर इतनी पुलिस होती है और जरा भी कुछ होता है तो उसे वहीं दबा दिया जाता है.

पुलिस सुरक्षा के लिए होती है लेकिन पुलिस अगर यूनिवर्सिटी के कायदेकानूनों में इंटरफियर करने लग जाए तो यह डैमोक्रेसी के लिए खतरनाक है. उन को किसी भी चीज को करने से रोके तो फिर वह कहीं न कहीं स्टूडैंट्स की आवाज को दबाता है. ●

लेख • ललिता गोयल

हरियाणा पंजाब के वायलैंट गाने

पंजाब के बाद अब हरियाणा अपनी कल्चरल आइडैंटिटी खोता नजर आ रहा है, यह सब वहां बढ़ रहे ड्रग्स, माफिया और गैंगस्टर्स कल्चर के चलते तो पहले से था ही, अब गैंगस्टर्स को ग्लोरीफाई करने वाले गीतों के चलते इन दोनों स्टेट्स की इमेज और भी खराब हो रही है, जिस के लिए यूट्यूब सिंगर्स जिम्मेदार हैं.

जरा एक नजर वायलैंस कल्चर बढ़ाते हरियाणा व पंजाब के यूट्यूब सिंगर्स के गीतों के लिरिक्स पर डालिए :

'मितरां नूं शौक हथियारां दा! मितरां शौक गोली चलाउन दा.'

यह बब्बू मान का गाना है जो अलबम 'ओही चन्न ओही रातां' में था.

'चारों पासे रौला पे गया जदों मारेया गंडासा हथ जोड़ के
खून दे तराले चलदे, थल्ले सुट्ट लए तोना नूं मरोड़ के'

इस का मतलब कुछ यों निकलता है कि 'दोनों हाथों को बांध कर अर्जन वेल्ली ने ऐसा गंड़ासा मारा कि चारों तरफ हाहाकार मच गया. कहीं खून की धाराएं बह रही थीं, कहीं उस ने दुश्मनों की गरदन को मरोड़ कर नीचे दबा रखा था.' यह पंजाबी गाना हाल में आई 'एनिमल' फिल्म का है.

'जगह तेरी टाइम तेरा डांग मेरी वहम तेरा रही खड़ा बस जट्ट कड्डों आन के' यानी जगह तुम्हारी पसंद की होगी टाइम भी तुम तय करना पर डांग मेरी होगी जो तुम्हारे सारे वहम दूर कर देगी.

एक और गाना 'जिन्हीं तेरी कालेज दी फीस झल्लिये उन्हीं नांगनी जट्टां दा पुत्त खांदा तड़के' यानी सुन लड़की, जितनी तेरी कालेज की फीस है उतने पैसों का नशा तो मैं सुबह उठते वक्त ही कर लेता हूं.

'जेल विचों फोन आऊंनगे, वेखी परखी न पहुंच जट्ट दी, साडे धाकड़ ये यार ने चलाउन फेसबुक अंदरों बने जेलों दे सिंगार ने.' यानी मेरी पहुंच पर सवाल मत खड़े करना वरना तुम्हें जेल में बंद गैंगस्टरों के फोन आएंगे, जेल में बंद मेरे बड़े धाकड़ यार मोबाइल और फेसबुक चलाते हैं, वे तो जेल का शृंगार बने हुए हैं.

यह मनकीरत औलख का एक सुपरहिट पंजाबी गीत है जिसे अब तक 2 करोड़ 60 लाख से भी ज्यादा लोग देख चुके हैं. आंकड़े बताते हैं कि पंजाब के हर घर तक यह गाना पहुंच गया होगा और बाद में इस गाने का असर ऐसा हुआ कि किसी नामीगिरामी गैंगस्टर को पंजाबी युवा अपना आदर्श मानने लगे. जिन्हें गानों में हीरो के तौर पर पेश किया गया, उन को गुंडे नहीं, भाई बनाया जाने लगा.

इन गीतों में गुंडा एक लड़की को दूसरे गुंडे से बचा रहा है और खुद दूसरी लड़की को छेड़ रहा है, गैंगस्टर को हीरो दिखाते इन गीतों में नशा, असलहा बारूद, दबंगई दिखाई जा रही है.

ये गीत यूथ को बिगाड़ने का काम कर रहे हैं. उन्हें वायलैंस करना, गुंडा बनना सिखा रहे हैं. यही वजह है कि यूथ छाती चौड़ी कर के, दबंगई दिखाते नजर आ रहे हैं. युवाओं की जबान पर ऐसे गाने हैं जिन में बंदूक है, नशा है, एके–47 है या फिर योयो है. असलहों, गैंगस्टर्स, माफियाओं, रेंज रोवर, थार, मारधाड़ पर पंजाबी गानों की भरमार है. पंजाबी व हरियाणवी गानों में इन्हें आईडियालाइज किया गया है. वीरेंद्र बरार, दीप जंदू, सिंगा, परमिश वर्मा, मानवगीत गिल, सुखा जैसे ढेरों सिंगर्स के ऐसे गाने हैं.

बात सिर्फ पंजाबी गानों की नहीं है. हरियाणा म्यूजिक इंडस्ट्री भी इस समय बूम पर है. युवा हरियाणवी गाने सुनना पसंद कर रहे हैं. पिछले साल रैपर द्वारा शुरू किया शो 'हसल' में 'छोरे एनसीआर आले' गाना इंट्रोड्यूस हुआ. यह गाना रैपर सिंगर पैराडौक्स और एमसी स्क्वायर ने मिल कर गाया. गाना एनसीआर के लफंगे गुंडों की आपसी टसल पर है. पूरा गाना बदमाशी और गुंडागर्दी पर है.

इसी तरह एक गाना '60 मुकदमे' है. गाना मंजीत कौर, शिवानी यादव ने गाया है. गाने में हीरो एक गैंगस्टर या डाकू है जिस पर 60 मुकदमे दर्ज हैं और वह एक शादी में घुसता है और दुलहन को अपने साथ ले जाता है. इसी तरह की पटकथा वाला एक गाना 'मेरे मितर' है जिसे मासूम शर्मा और कोमल चौधरी ने गाया है. गाने में गैंगस्टर हीरो है जो पुलिस वालों को मार रहा है और लास्ट में खुद ही सरैंडर कर देता है. इसी सिंगर के और गाने 'चंबल का डाकू' और 'वेपन' सरीखे हैं जो गुंडागर्दी पर ही हैं.

द कनाडियन इनसाइक्लोपीडिया के अनुसार, करण औजला कनाडाई पंजाबियों के बीच 'सौंग मशीन' के नाम से फेमस हैं. औजला के '52 बार्स' और 'टेक इट इजी' को कनाडा के टौप–10 वीडियो में स्थान दिया गया है. औजला की सिद्धू मूसेवाला के साथ बराबरी की टक्कर थी. दोनों अपने गानों के जरिए एकदूसरे को जवाब देते रहे हैं. दोनों कलाकारों की हिंसा को बढ़ावा देने वाले गानों के लिए आलोचना भी की गई.

औजला के खिलाफ एक प्रोफैसर ने शिकायत भी दर्ज कराई कि करण का संगीत शराब, ड्रग्स और हिंसा के हानिकारक कंटैंट को बढ़ावा देता है. जानकारी के मुताबिक, प्रोफैसर ने करण से अनुरोध किया है कि वे अपने कन्सर्ट के दौरान चित्ता कुरता, फ्यू डेज, अधिया, बंदूक, अल्कोहल 2 और गैंगस्टा जैसे ट्रैक परफौर्म न करें. उन्होंने कहा कि ये गाने श्रोताओं पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं.

हरियाणवी गीत भी नहीं हैं पीछे

गायक मासूम शर्मा और रूचिका जांगड़ा के गीत के बोल हैं, 'टेडी बीयर का शौक नहीं राखदी, जाटणी ने गिफ्ट में गन दे दे न.' प्रदीप बूरा व पूजा हुड्डा का गाना है, 'बता किस की फीलिंग लानी है, तेरा यार जमानत पर आया.' हर्ष संधु, प्रांजल दहिया के गीत के बोल हैं, 'एके 47 धरे संदूकां पे, लिख के बैरी लिख कर घूमें से मेरा नाम बंदूखा पे.'

इसी प्रकार, सपना चौधरी का गाना है, 'शूटर ते बन गया तेरा यार माफिया, तैन्नू गिफ्ट में दूंगा 12 बोर की.' मासूम शर्मा का गाना है कि 'तू क्यूकर बनगा दो नंबरी, तैन्नू ढूंढ़े पुलिस आले.' ऐसे दर्जनों गाने सोशल मीडिया पर चल रहे हैं.

एक बार किसी नामी विद्वान ने कहा था कि ''आप मुझे बस इतना बता दीजिए कि आप के देश के युवाओं की जबां पर किस तरह के गीत चढ़े हुए हैं, मैं आप को आप के देश का भविष्य बता दूंगा.'' उस विद्वान की कही हुई यह बात आज पंजाब के युवाओं पर पूरी तरह फिट बैठती है. अगर आप को यकीन नहीं है तो बेझिझक एक चक्कर यूट्यूब पर पंजाबी व हरियाणवी गानों को सुन लीजिए. किसी गैंगस्टर को हीरो की तरह पेश करने वाले, लड़की को छेड़ने में मजा लेने वाले, नशा करने को शान की बात बताने वाले, बंदूक से गोली चला कर किसी को मार देने वाले पंजाबी गीतों की भरमार आप को मिल जाएगी. मजेदार बात यह है कि ये गाने न सिर्फ पंजाब के युवाओं की जबां पर चढ़े हैं बल्कि हर पार्टी, शादी समारोह का हिस्सा बन चुके हैं. आलम यह है कि गाने को सुन कर अब पंजाबी मुंडा किसी कुड़ी को छेड़ने, नशा कर घूमने को गलत नहीं, बल्कि उसे अपनी शानोशौकत समझने लगा है.

'बंदूक कल्चर को बढ़ावा देना बंद करें पंजाबी गायक'

गौरतलब है कि वायलैंस कल्चर बढ़ाते हरियाणा व पंजाब के इन गीतों के कारण पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने पंजाब और हरियाणा राज्यों तथा केंद्र शासित क्षेत्र चंडीगढ़ के पुलिस प्रमुखों को निर्देश दिया था कि ऐसे गाने नहीं बजाए जाएं जिन से शराब, नशीले पदार्थ और हिंसा को बढ़ावा मिलता हो. ऐसे गानों पर रोक लगाई जाए जिन में हथियारों का प्रदर्शन और हिंसा का

महिमामंडन होता है. हाल के सालों में पंजाबी गानों में हथियारों, हिंसा और उग्र प्रदर्शन आम हो चला है. गायक अपने अलबम को हिट कराने के लिए बंदूकों और हिंसा का सहारा लेते हैं. हाल ही में पंजाब कला भवन में पंजाब साहित्य अकादमी और इप्टा पंजाब ने भी एक सैशन आयोजित किया जिस में पंजाबी गीतों में बढ़ रही वल्गैरिटी व हिंसा के यंगस्टर्स पर हो रहे बुरे असर पर चर्चा की गई.

स्टेट की इमेज को बदनाम करते गाने

जिस तरह यूपीबिहार के यूट्यूब सिंगर्स ने सैक्सिमस्ट गानों से राज्यों को बदनाम कर दिया है और एक तरह की इमेज स्टीरियो टाइप कर दी है उसी तरह हरियाणा व पंजाब के यूट्यूब सिंगर्स अपने राज्यों की इमेज को खराब व बदनाम कर रहे हैं. वायलैंस और गन कल्चर को बढ़ावा देते ये सिंगर्स युवाओं को मर्दानगी वाले, अक्खड़ इमेज वाले गीत परोस रहे हैं.

इन गीतों के कारण हरियाणा के लोगों से आमजन डरते हैं. उन की इज्जत नहीं करते. यही कारण भी है कि हरियाणा वालों को उलटे दिमाग का, बातबात पर झगड़ा करने वाला, अक्खड़ मिजाज वाला, सनकी समझा जाता है जबकि वहां के आम लोग ऐसे नहीं हैं.

पंजाब में फलताफूलता गन कल्चर और गैंगवार

पंजाब व हरियाणा में गन कल्चर और गैंगवार फलफूल रहा है. यह उन के गानों में भी दिखाई देता है. दोनों राज्य कृषि प्रधान हैं और कृषि व किसानों के नाम से ही चर्चा में होने चाहिए थे मगर यहां की एक इमेज गुंडागर्दी की भी उभर कर आ रही है जो गैंगस्टर्स और उन पर फिल्माए गानों से है.

पंजाबी सिंगर सिद्धू मूसेवाला की हत्या इसी गैंग कल्चर से हुई. सिद्धू मूसेवाला की हत्या की जिम्मेदारी तिहाड़ जेल में बंद लौरेंस बिश्नोई और कनाडा में रह रहे गोल्डी बराड़ ने ली. हाल में बाबा सिद्दीकी की हत्या में लौरेंस का नाम जोड़ा गया. जिस के बाद उत्तर भारत के युवाओं ने उसे खूब ग्लोरिफाई किया. लौरेंस बिश्नोई की हरकतों का विरोध करने की जगह उसे आईडियालाइज किया. आज उस का गैंग या उस जैसे गैंगस्टर्स देशभर में फिरौती मांग रहे हैं.

पिछले एक साल में ही दर्जनों ऐसे हरियाणी गाने बनाए गए हैं जिन में हथियारों और बदमाशों को महिमामंडित किया गया है. युवा इन गानों को पसंद कर रहे हैं और शादी या अन्य समारोह में बदमाशी के गाने खूब बज रहे हैं. इन गानों पर युवा हर्ष फायरिंग तक कर रहे हैं. युवाओं में बढ़ता यह ट्रैंड भविष्य में हरियाणा के लिए खतरनाक साबित हो सकता है.

पंजाब में शुरू से ही गन कल्चर का चलन है. 2012 में आए बब्बू मान का गीत 'मित्रां

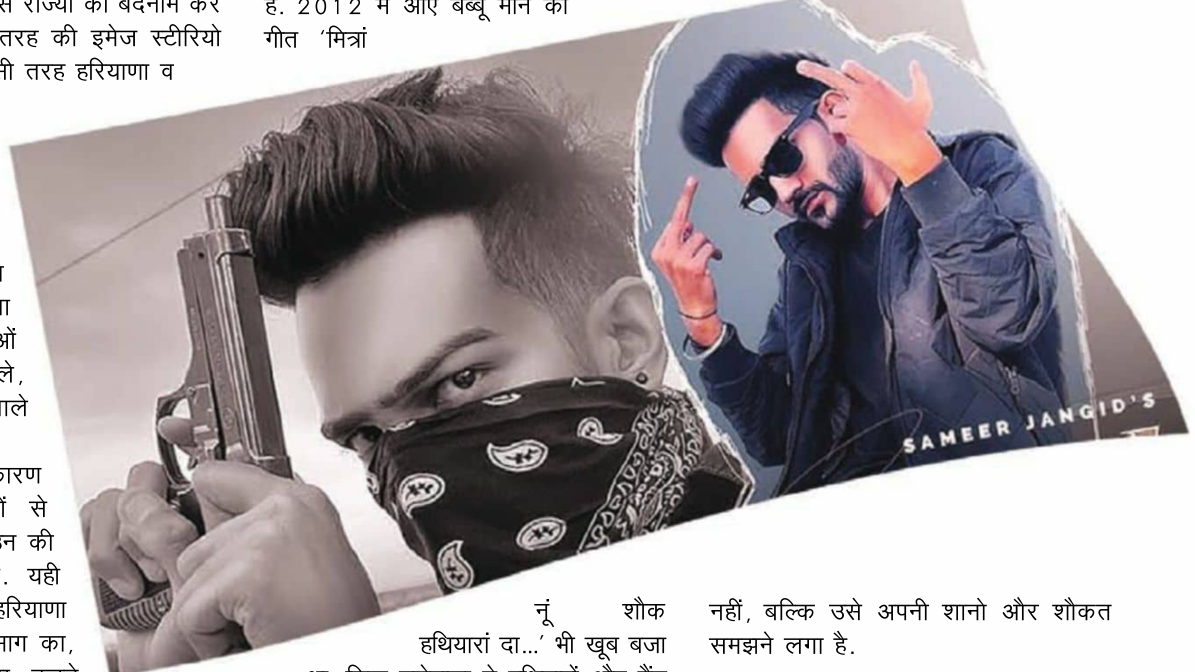

नूं शौक हथियारां दा...' भी खूब बजा था. सिद्धू मूसेवाला ने हथियारों और गैंग कल्चर को ले कर कई गाने बनाए थे. पंजाब के साथसाथ इन गानों को हरियाणा में भी पसंद किया गया. हरियाणवी गायक और लेखकों ने भी इसी ट्रैंड को पकड़ा है.

अहम बात यह है कि इन गानों में सपना चौधरी से ले कर प्रदीप बूरा, पूजा हुड्डा से ले कर अन्य हरियाणवी कलाकार हैं जिन के लाखों दर्शक हैं. इन के गानों में मारधाड़, धड़ाधड़ चलती गोलियां और बदमाशों को महिमामंडित किया गया है. गैंगस्टर्स को घेरे सुरक्षा गार्ड या फिर इन के आगे डरा प्रशासन जैसे ये गीत जैनरेशन जी और मिलेनियल्स को गलत मैसेज दे रहे हैं.

युवाओं की मनोदशा पर पड़ता गलत असर

गीतों में बढ़ते वायलैंस कल्चर को देखते हुए अब गीतों पर निगरानी के लिए आयोग गठन किए जाने की मांग उठने लगी है. करनाल निवासी बौलीवुड कलाकार संजीव लखनपाल का कहना है कि गीतों में गन कल्चर कतई सही नहीं है. इन की निगरानी के लिए आयोग का गठन होना चाहिए. गीत या फिर कला ऐसी होनी चाहिए जिस से समाज में अच्छा संदेश जाए. बात सही भी है. सवाल तो बनता है कि क्या हरियाणा व पंजाब गुंडों बदमाशों के चलते जाना जाए?

वहीं, मनोचिकित्सक डा. विवेक गर्ग का कहना है कि गीतों में बदमाशों को हीरो की तरह पेश किया जाता है, जिस का युवाओं की मनोदशा पर सीधा असर पड़ता है. यही वजह है कि आज एक पंजाबी मुंडा किसी कुड़ी को छेड़ने, नशा कर घूमने को गलत नहीं, बल्कि उसे अपनी शानो और शौकत समझने लगा है.

कहां गई गीतों की संजीदगी और सादगी

पंजाबी लोकगीत अपनी मिठास, अपनी संजीदगी और अपनी सादगी के लिए जाने जाते रहे हैं पर दलेर मेंहदी, योयो हनी सिंह, दलजीत दुसांझ, गिप्पी ग्रेवाल, मीका सिंह जैसे गायकों ने पंजाब की लोकगायिकी को अचानक अलग तेवर देने शुरू किए जिस में रिमिक्स था, धमाकाबाजी थी, तड़कभड़क था, जोर का संगीत था, शराब थी, लड़की थी और अंत में बंदूक थी. नतीजा, पंजाब के युवा पौप गायिकी के जरिए मदहोश होने लगे.

पंजाब व हरियाणा के पास लोक संगीत की बड़ी धरोहर है. बहुत पुरानी कहावत है कि किसी मुल्क को खत्म करना हो तो वहां के कल्चर को बिगाड़ दो.

पंजाब व हरियाणा के साथ भी यही हो रहा है. सरकारें भी कुछ सही नहीं करना चाहतीं. वे तो चाहती हैं कि हमारे युवा भटके हुए नशे की लत में पड़े रहें. इस से उन से कोई सवाल करने वाला नहीं होगा. जबकि यंगस्टर्स समझदार होंगे तो रोटी मांगेंगे, नौकरी मांगेंगे. ●

पुष्पा 2 की थप्पड़ गर्ल श्रीलीला

लेख • शांतिस्वरूप त्रिपाठी

थप्पड़ गर्ल के नाम से चर्चा में आई श्रीलीला इंटरनैट सैंसेशन बन गई हैं. श्रीलीला ने कन्नड़ और तेलुगु फिल्मों में अभिनय किया मगर वह असफल रहीं, लेकिन पुष्पा 2 के एक आइटम सौंग ने उन्हें बड़ी पहचान दी है. सवाल यह कि क्या वह इस पहचान को भुना पाएंगी?

'पुष्पा 2 द रूल' में 'किसिक' गाने में डांस नंबर कर पूरी दुनिया में छा जाने वाली एमबीबीएस पदवीधारी अभिनेत्री श्रीलीला भारतीय मूल की अमेरिकन अभिनेत्री हैं, जिन्हें दर्शक 2017 से तेलुगु और कन्नड़ सिनेमा में देखते आ रहे हैं. 2019 की कन्नड़ फिल्म 'किस' में मुख्य भूमिका निभाने से पहले वह 2017 में एक बाल कलाकार के रूप में फिल्म 'चित्रांगदा' में नजर आई थीं. फिर तेलुगु फिल्मों पेली सांडाडी (2021) और धमाका (2022) में अभिनय कर सुर्खियों में छा गईं. स्त्री रोग विशेषज्ञ स्वर्णलता की बेटी श्रीलीला का जन्म 14 जून, 2001 को डेट्रॉइट, मिशिगन, अमेरिका में हुआ था.

श्रीलीला का पालनपोषण बेंगलुरु भारत में हुआ. बेंगलुरु निवासी उन की मां स्वर्णलता का विवाह उद्योगपति सुरपानेनी शुभकर राव से हुआ था और जोड़े के अलग होने के बाद स्वर्णलता ने लीला को जन्म दिया था. अपनी मां की तरह डाक्टर बनने का सपना देखने के बावजूद श्रीलीला ने बचपन में ही भरतनाट्यम नृत्य का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया था. 2021 में उन्होंने एमबीबीएस की पढ़ाई पूरी करते ही फरवरी 2022 में, 2 विकलांग बच्चों को गोद ले लिया था.

एमबीबीएस की पढ़ाई और बाल कलाकार

श्रीलीला ने एमबीबीएस की पढ़ाई करते हुए 2017 में तेलुगु फिल्म 'चित्रांगदा' सिंधु तोलानी के चरित्र के युवा संस्करण को निभाते हुए अभिनय जगत में कदम रखा. उस के बाद निर्देशक एपी अर्जुन ने सोशल मीडिया पर श्रीलीला की फोटो देख कर उन्हें 2019 में रिलीज हुई अपनी कन्नड़ फिल्म 'किस' नंदिनी का किरदार निभाने का अवसर दे कर हीरोइन बना दिया, जिस की शूटिंग 2017 में ही शुरू हुई थी, 2019 में जब फिल्म 'किस' रिलीज हुई तो फिल्म आलोचकों ने श्रीलीला को आत्मविश्वास से भरपूर स्टाइलिश एक्ट्रैस बता डाला.

फिर निर्देशक श्री मुरली के साथ उन की दूसरी कन्नड़ फिल्म 'भारते' रिलीज हुई. इस के बाद उन्हें रोमांटिक म्यूजिकल तेलुगु फिल्म 'पेली सैंडडी' मिली, जोकि 2021 में रिलीज हुई थी. इस तरह 2021 में पहली बार श्रीलीला ने तेलुगु सिनेमा में कदम रखा था.

फिल्म आलोचकों ने इस फिल्म की जम कर बुराई की, लेकिन सभी ने एक स्वर से श्रीलीला के अभिनय की तारीफ की थी पर वह फिर कन्नड़ सिनेमा में लौट आईं और 2022 में उन्होंने कन्नड़ रोमांटिक कौमेडी फिल्म 'बाय टू लव' में अभिनय कर हंगामा बरपा दिया. 2022 में ही श्रीलीला फिल्म 'जेम्स' के गीत 'ट्रेडमार्क' में डांस करते नजर आईं. 2022 में एक बार फिर वह रवि तेजा के साथ तेलुगु फिल्म 'धमाका' में नजर आईं. फिर वह तेलुगु फिल्मों की हो कर रह गईं.

उस के बाद उन्होंने राम पोथिनेनी के साथ 'स्कंद' में अभिनय किया, जिसे बौक्स औफिस पर सफलता न मिल सकी. इस के बाद अनिल रविपुडी निर्देशित फिल्म 'भगवंत केसरी' में वह नंदमुरी बालकृष्ण और काजल अग्रवाल के साथ नजर आईं, इस फिल्म ने सफलता के झंडे गाड़ते हुए 2023 की तेलुगु भाषा की सब से अधिक कमाई वाली फिल्म बन गई.

इस फिल्म के लिए श्रीलीला को सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेत्री, तेलुगु के फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामांकित किया गया था. इस के बाद वह पांजा वैष्णव तेज के साथ और श्रीकांत एन रेड्डी द्वारा निर्देशित फिल्म आदिकेशव में दिखाई दीं, जिसे सफलता नहीं मिली. उन्होंने 8 दिसंबर, 2023 को रिलीज फिल्म ''एक्स्ट्रा और्डिनरी मैन' में भी अभिनय किया, जो कि बौक्स औफिस पर फुसफुसा बम साबित हुई.

2024 में उन की पहली फिल्म ''गुंटूर करम', महेश बाबू के साथ रिलीज हुई, 200 करोड़ रुपए में बनी यह फिल्म बौक्स औफिस पर केवल 170 करोड़ ही एकत्र कर सकी, लेकिन इस फिल्म में श्रीलीला के डांस को ले कर फिल्म आलोचकों ने लिखा कि वह सपने में डांस करती हैं. फिर 5 दिसंबर, 2024 को रिलीज सुकुमार निर्देशित फिल्म 'पुष्पा 2: द रूल' मे अल्लू अर्जुन के साथ आइटम डांस 'किसिक' में डांस कर श्रीलीला ने हंगामा बरपा दिया.

लोग आश्चर्यचकित इस बात पर हैं कि लगातार 3 असफल फिल्मों के बाद श्रीलीला ने महज एक डांस नंबर में सारी कमी पूरी कर डाली. हम यहां याद दिला दें कि 'पुष्पा द राइज' में सामंथा रूथ प्रभु ने डांस नंबर किया था, मगर 'पुष्पा 2 द रूल' में 'किसिक' डांस नंबर करने को वह तैयार नहीं हुईं.

फिल्म में डांस के लिए बौलीवुड अभिनेत्रियों के अलावा साउथ की कुछ अभिनेत्रियों से बात हुई थी पर किसी के भी साथ बात नहीं बनी थी. तब निर्देशक सुकुमार ने श्रीलीला को इस गाने के लिए जोड़ा था. जब यह गाना सोशल मीडिया पर रिलीज किया गया तो महज 12 घंटे में ही इस गाने को 18 मिलियन व्यूज मिल गए.

कुछ दिन पहले श्रीलीला ने 'किसिक' डांस की चर्चा करते हुए कहा, ''यह गाना अपनेआप में मेरी पसंद को सही ठहराएगा. यह कोई विशिष्ट आइटम सौंग नहीं है. इस के पीछे एक मजबूत कथात्मक कारण है, जिसे आप फिल्म देख कर समझ गए होंगे. संगीतकार देवी श्री प्रसाद द्वारा रचित 'किसिक' गाना तभी तो सभी के बीच पसंद किया जा रहा है.''

मजेदार बात यह है कि इन दिनों सोशल मीडिया पर एक म्यूजिक वीडियो सुर्खियां बटोर रहा है, जिस में श्रीलीला को अपना मेकअप करवाते हुए शाहरुख खान और काजोल स्टारर फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' के गाने 'मेरे ख्वाबों में जो आए..' पर खुशी से थिरकते हुए देखा जा सकता है.

इस गाने की लोकप्रियता के कारण श्रीलीला को अक्किनेनी ब्रदर्स के साथ डबल औफर मिला अब श्रीलीला एक ही समय में अक्किनेनी भाइयों–नागा चैतन्य और अखिल के साथ फिल्मों में काम करने वाली हैं.

इतना ही नहीं श्रीलीला निर्देशक मुरली किशोर अब्बुरी के साथ एक और फिल्म पर काम करने के लिए भी सहमत हो गई हैं, जिस में अक्किनेनी अखिल मुख्य भूमिका निभाएंगे. इन दोनों फिल्मों की शूटिंग 2025 की पहली छमाही में शुरू होने वाली है, जो श्रीलीला के लिए दोनों अक्किनेनी भाइयों के साथ एकसाथ सहयोग करने का एक अनूठा अवसर है.

इन दिनों यह चर्चाएं भी हो रही हैं कि श्रीलीला का असीम आकर्षण, भावुक कौशल और मंत्रमुग्ध कर देने वाली स्क्रीन उपस्थिति उन्हें बौलीवुड में एक उभरता हुआ सितारा बनाने के लिए उपयुक्त है.

श्रीलीला कहती हैं, ''तेलुगु सिनेमा में महेश बाबू, रवि तेजा, पवन कल्याण, अल्लु अर्जुन जैसे अभिनेताओं के साथ स्क्रीन साझा करने से मेरी अभिनय क्षमता विकसित करने में मदद मिली है. मैं इन में से प्रत्येक अभिनेता, उन की तैयारी और सैट पर उन के व्यवहार का निरीक्षण करती हूं.

''यह दिलचस्प है कि कैसे प्रत्येक अभिनेता कुछ अलग लाता है और मैं इस प्रक्रिया का आनंद ले रही हूं. अवलोकन और सीखना वास्तव में, उन में से प्रत्येक के साथ काम करना एक आशीर्वाद रहा है. कन्नड़ सिनेमा तो मेरा घर है. मुझे तेलुगु के अलावा मलयालम और तमिल सिनेमा से भी प्रस्ताव मिल रहे हैं. मैं शायद एक तमिल फिल्म 'एस के 25' कर सकती हूं.''

श्रीलीला की तमन्ना रौम कौम और पीरियड फिल्मों का हिस्सा बनने की है.

फिलहाल श्रीलीला बेकार नहीं हैं. 2025 में नीरा वासुदेव की तेलुगु फिल्म ''रौबिनहुड', 'मास जात्रा' व 'उस्ताद भगत सिंह' में नजर आने वाली हैं. ●

2024 में क्यों छाए रहे ये कपल इन्फ्लुएंसर्स

दीक्षा एंड विशाल

दीक्षा और विशाल सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स हैं. दोनों के बीच अच्छी कपल बौंडिंग है. दीक्षा मिनी ट्रैवल व्लौगर, मेकअप आर्टिस्ट हैं. उन के इंस्टा पर ढाई लाख से अधिक फौलोअर्स हैं. वहीं विशाल का कंटैंट यंग बौयज के कौन्टैक्स्ट पर होता है.

अनिरुद्ध एंड मृणाल

दोनों सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर्स हैं. दोनों की हाल में शादी हुई है. अनिरुद्ध के 16 लाख फौलोअर्स हैं पर क्यों हैं, यह समझ नहीं आया. इस से अच्छा काम मृणाल का है. वे मेकअप आर्टिस्ट हैं.

कोमल एंड सिद्धार्थ

कोमल पांडे जानीमानी इन्फ्लुएंसर हैं जिन के इंस्टा पर 19 लाख फौलोअर्स हैं. वे इंस्टा मौडल हैं. वहीं सिद्धार्थ बत्रा मेन्स ग्रूमिंग के टिप्स देते हैं. उन की रील्स मेन्स मेकअप और स्किन केयर पर होती हैं. उन के तकरीबन ढाई लाख फौलोअर्स हैं.

नीतू एंड लखन

नीतू डिजिटल क्रिएटर हैं. इन के 46 लाख से अधिक इंस्टा फौलोअर्स हैं. लखन के लगभग 21 लाख फौलोअर्स हैं. नीतू की पोस्ट में अकेली नीतू दिखती हैं तो लखन की अधिकतर पोस्ट नीतू के साथ होती हैं.

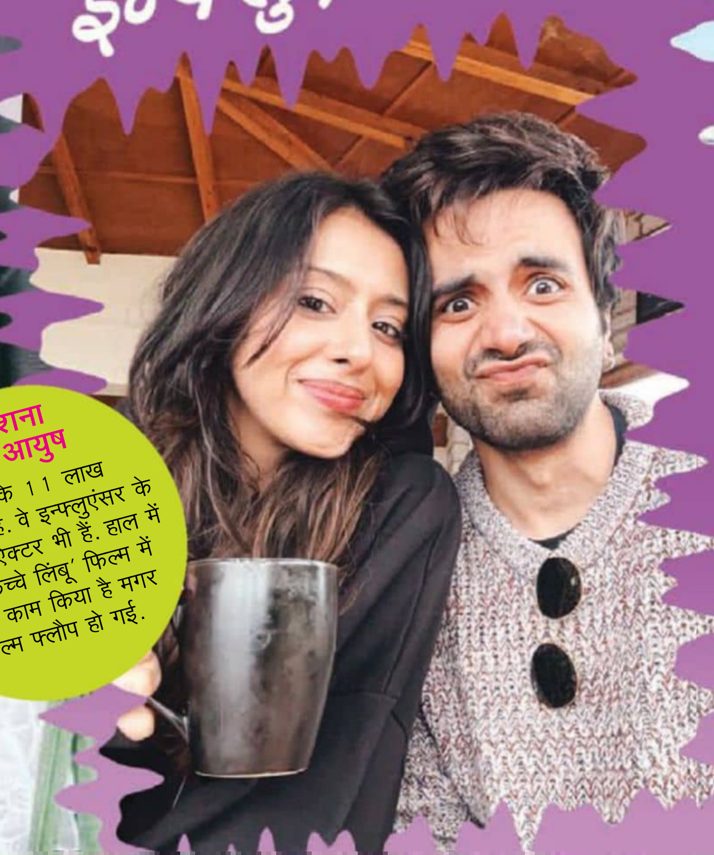

आशना एंड आयुष

आयुष के 11 लाख फौलोअर्स हैं. वे इन्फ्लुएंसर के साथसाथ ऐक्टर भी हैं. हाल में आई 'कच्चे लिंबू' फिल्म में उन्होंने काम किया है मगर फिल्म फ्लौप हो गई.

सावि एंड विद

सावि और विद दोनों ट्रैवल इन्फ्लुएंसर्स हैं. दोनों का 'ट्रैवल एंड लव' नाम का एक जौइंट इंस्टा अकाउंट है जिस पर 12 लाख से ज्यादा फौलोअर्स हैं. इन की अधिकतर पोस्ट ट्रैवल को ले कर हैं.

डेजी एंड अंकित

डेजी और अंकित हौट कपल इन्फ्लुएंसर्स हैं जिन के 4 लाख से अधिक फौलोअर्स हैं. दोनों फैशन, ट्रैवल, लाइफस्टाइल और लव से रिलेटेड कंटैंट पोस्ट करते हैं. डेजी अपनी सिजलिंग पिक्चर्स अपलोड करती हैं और अंकित स्टाइलिश.

–प्रतिनिधि ●

समय रैना इस समय भारत के टौप कौमेडियनों में से एक है. अपने वन लाइनर ह्युमरिस्टिक पंच ने उसे यूथ आइकन बना दिया है. हालांकि कभीकभी वह ओवर द टौप हो जाता है जो उस के पोडकास्टर जोए रीगन जैसा होने का आभास कराती है.

व्हाई समय रैना डौंट हैजिटेट

‘इंडियाज गोट लैटेन्ट’ यूट्यूब में ऐसा हिट शो बन गया है जिस की चर्चाएं आजकल हर जगह हैं. ये चर्चाएं इसलिए हैं क्योंकि इस का कौन्सैप्ट डार्क कौमेडी पर बेस्ड है और इस का होस्ट कौमेडियन समय रैना है. समय रैना जो अपने वन लाइनर पंचेज, कंट्रोवर्सीज, चैस गेम स्किल्स, स्टैंडअप के लिए मशहूर है. वह जो बोलता है उस के गहरे मतलब होते हैं, जो उस की बातें नहीं समझ पाता वह अपना माथा धुनता है और जो समझ जाता है वह खिलखिला जाता है और दंग रह जाता है. समय रैना 26 साल का है मगर इतनी छोटी उम्र में उस ने वह ऊंचाई हासिल कर ली है जिस के लिए सालों लग जाते हैं.

कश्मीरी स्टैंडअप कौमेडियन जो कईयों के लिए सवाल बना हुआ है कि उस का माइंडसैट किस तरह काम करता है और उसे हर चीज डार्क में कहने की आदत क्यों है? दूसरा यह कि वह सीरियस बातों को ह्यूमर के साथ नौन सीरियस तरीके से कैसे कह सकता है? साथ ही डार्क कौमेडी का ट्रैंड आजकल भारत में क्यों बढ़ रहा है?

एक समय था जब सैंसिटिव टौपिक्स को सैंसिटिवली हैंडल करने की बात कही जाती थी. जब कोई अपनी सीरियस बात बताता था तो मिनिमम अंडरस्टैंडिंग यह होती थी कि कोई उस समय उस का या उस बात का मजाक न बनाए लेकिन डार्क कौमेडी इसी बात पर आधारित है कि सैंसिटिव बातों को भी ह्यूमर के साथ मजाकिया अंदाज में कही जाए. दुखी माहौल में एक वन लाइनर आता है जिस से माहौल खुशनुमा हो जाता है.

डार्क कौमेडी का बढ़ता चलन

डार्क कौमेडी का चलन भारत में बढ़ रहा है. जेनजी मिलेनियल्स इसे फन की तरह देखते हैं. यह शुरू तो अमेरिका से हुआ जहां स्कूलों में हो रही मास शूटिंग, रेसिज्म, धर्म और अमीरीगरीबी पर जम कर जोक बनते रहे पर अब 2–3 सालों से भारत में भी चलन में है और कास्टिज्म, चाइल्ड लेबर, वूमन एट्रोसिटी, रेप, डोमेस्टिक वायलैंस, डैथ, मैंटल हैल्थ जैसे सैंसिटिव विषयों पर भी ह्यूमर और कौमेडी होती है.

यह एक तरह का सर्काज्म, सिनिसिज्म और ह्यूमर का मेल है. कईयों को कौमेडी का यह जौनर इंसैंसिटिव लगता है और इसे औफ लिमिट बताते हैं, जिस की कोई हद नहीं पर कई ऐसे हैं जो इसे पौजिटिव तरीके से लेते हैं. वे मानते हैं कि डार्क ह्यूमर के चलते गंभीर मुद्दे यूथ के डिस्कशन में आते हैं.

समय रैना उस लिस्ट में है जिस ने इस विधा को पौजिटिवली लिया है. वह खुद को सैक्युलर बताता है. उस का जन्म जम्मू के एक कश्मीरी पंडित परिवार में हुआ और उसे पलायन की मार झेलनी पड़ी. उस ने अपनी पढ़ाई हैदराबाद में की और आगे जा कर प्रिंटिंग इंजीनियरिंग की, जिस के चलते उसे बड़ी शोहरत मिली. उस का शुरूआती स्टैंडअप कौमेडी प्रिंटिंग इंजीनियरिंग के अपने कोर्स पर ही थी जिस ने उसे चर्चाओं में ला दिया. इस के बाद ‘नरक’, ‘रोस्ट बैटल’ और कौमेडी ब्लोग से उसे काफी पहचान मिली.

समय रैना कौमेडी में डौमिनेट कर रहा है, यहां तक कि व्यूज के मामले में वह कपिल शर्मा को भी पीछे छोड़ चुका है. इस का कारण उस की डार्क ह्यूमर कौमेडी का होना है. उस के यूट्यूब पर ‘इंडियाज गोट लैटेंट’ शो के 11 एपिसोड आ चुके हैं और हर एपिसोड में लगभग ढाई करोड़ से अधिक व्यूज हैं. हालांकि यह शो भी अमेरिकन यूट्यूब शो ‘किल टोनी’ से कौपी किया गया है पर आज की डेट में समय का शो ‘किल टोनी’ से काफी आगे है.

डार्क ह्यूमर कोई नई विधा नहीं है. यह एक खास तरह की कौमेडी स्टाइल है, जो अब समय रैना के ‘इंडियाज गोट लैटेंट’ शो के चलते मेनस्ट्रीम में आ गई है. यह शो जो पोइंटलैस है, अपने सटायर और ह्यूमर के चलते बताता है कि दुनिया में सब फनी हो सकता है.

ऐसा नहीं कि कौमेडियन ने इसे फेमस किया, इस से पहले भी कई फिल्में आई हैं जो डार्क कौमेडी पर बेस्ड रहीं. भारत में बनीं ‘कलाकांडी’, ‘अंधाधुंध’, ‘देव डी’, ‘सुपर डीलक्स’, ‘भेजा फ्राई’ जैसी हिंदी फिल्में तो हैं ही पर टिपिकल डार्क ह्यूमर मूवी फिल्म हौलीवुड में बनती रहीं जैसे ‘द डिक्टेटर’, ‘गुर्गो’, ‘फाइट क्लब’, ‘बोरात’ इत्यादि.

मौजूदा समय में अमेरिका में एंथनी जेसलनिक और पीट डेविडसन वे डार्क कौमेडियन हैं जो ऐसा कुछ करते हैं, जैसा भारत में समय रैना करता है. इन्हें लोग खूब देखते हैं. लेकिन चीजें सिर्फ डार्क और लाइट नहीं होतीं, कुछ संतरी और हरी भी होती हैं. प्रौब्लम तब आती है जब लोग डार्क ह्यूमर का इस्तेमाल गलत चीजों को छिपाने के लिए करते हैं. मानिए किसी अपर कास्ट लड़के को लोअर कास्ट लड़के से दिक्कत है. वह उस पर कास्टिस्ट तंज मारता है इस बहाने से कि यह डार्क ह्यूमर था और सब लोग ठहाके मारते हैं. जैसे यह भी कि किसी लड़के को किसी लड़की के इंडिपैंडैंट होने से दिक्कत है, वह उस पर फैमिनिस्ट जोक मार कर उस के इंडिपैंडैंसी का मजाक बनाता है और वहां बैठे सारे लड़के हंसते हैं.

कौमेडी के नाम पर कुंठाएं जाहिर

डार्क ह्यूमर में दिक्कत नहीं पर सैंसिटिव टौपिक्स पर ह्यूमरिस्टिक होने के बजाय ‘कुछ लोग’ औफेंसिव और इनसैंसिटिव बातें बोलने का बहाना बना रहे होते हैं. जैसे सोशल मीडिया पर मुसलिमों के लिए डार्क ह्यूमर के नाम पर अपनी बहन से शादी करने का मजाक नौर्मली बनाया जाता है या खास म्यूजिक बजा कर टेररिस्ट लेबलिंग की जाती है.

इसे अमेरिका के कौमेडियन लुईस सीके के मामले से समझ सकते हैं. 2017 में जब उन्होंने कई महिलाओं का यौन शोषण स्वीकार किया तो उस के बाद उन्होंने स्टैंडअप करना शुरू किया. अपने शो में उन्होंने पार्कलैंड स्कूल शूटिंग के सर्वाइवर्स का मजाक उड़ाया. उन्होंने इसे डार्क ह्यूमर बताया, लेकिन सच यह था कि उन के द्वारा कहे गए कई नफरती शब्द थे जो डार्क कौमेडी का नाम ले कर बोले गए.

ठीक इसी तरह सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर से एक्ट्रैस बनीं कुशा कपिला इस साल जून महीने में कौमेडियन आशीष सोलंकी के ‘प्रिटी गुड रोस्ट शो’ में नजर आई थी. वह इस शो की गैस्ट थी, जिसे रोस्ट किया जाना था. इस शो का कोई फौर्मेट नहीं था, न ही यह स्क्रिप्ट बेस्ड था. हुआ यही कि इस शो में उन की बौडी और तलाक के बारे में काफी एडल्ट और इंसैंसिटिव जोक्स सुनाए गए और डार्क कौमेडी के नाम पर अपनी हद पार करने वालों में समय रैना मुख्य कौमेडियन थे. ये जोक्स इस हद तक वल्गर थे कि जोक्स को म्यूट करना पड़ा.

हैरानी यह कि वहां आई पढ़ीलिखी जेनजी यूथ इन्हीं जोक्स पर तालियां पीटती रही. इस वाकए के बाद भारत में टीनएजर्स और यूथ ने कुशा को ट्रोल करना शुरू किया और हाल में दिए इंटरव्यू में कुशा ने बताया कि उन्हें कमैंट सैक्शन में लिखा गया कि ‘समय भाई ने इस औरत को उस की जगह दिखा दी.’

भारत और अमेरिका में टीनएजर्स में इस तरह की टैंडैंसी देखने को मिल रही है. अमेरिका में मागा वाले टीनएजर्स और यूथ अपने सोशल मीडिया पर ऐसे ‘जोक्स’ शेयर करते हैं, जिन में माइग्रेंट्स, यहूदी या एलजीबीटी समुदाय के खिलाफ औफेंसिव बातें होती हैं. ऐसा ही भारत में डार्क कौमेडी के नाम पर है.

इस का एक उदाहरण ऐसी एक रील से समझिए जिस में गुजरात में एलजीबीटीक्यू प्राइड परेड हो रही है और उस के ऊपर कैप्शन में लिखा है कि ‘हिंदू भाई जेसीबी ले कर आओ, मुसलिम जैकेट (टेररिस्ट स्लर) ले कर आओ, क्रिश्चियन ताबूत ले कर आओ, सिख तलवार ले कर आओ बाकी दलित कोर्ट केस संभाल लेना.’

अच्छे ह्यूमर की जरूरत

हालांकि इस का यह मतलब कतई नहीं है कि डार्क ह्यूमर गलत है या ‘इंडियाज गोट लैटेंट’ या इस तरह के शो बंद हो जाने चाहिए. प्रौब्लम डार्क ह्यूमर नहीं है, बल्कि उन लोगों की है, जो इस की आड़ में नफरत फैलाते हैं.

अगर यह ट्रैंड ऐसे ही चलता रहा तो सही तरीके से डार्क ह्यूमर करने वाले आर्टिस्ट्स को भी क्रिटिसिज्म झेलना पड़ सकता है. जरूरी यह भी है कि उन लोगों का क्रिटिक होना चाहिए जो डार्क ह्यूमर का गलत इस्तेमाल कर रहे हैं. ऐसे लोग जो इस की आड़ में अपने दिमाग का गंद बाहर निकाल रहे हैं. समय रैना अपने इस जौनर में मास्टर जरूर है और चीजों को हैंडल कर रहा है, उस की कही हर लाइन ह्यूमर से भरी जरूर रहती है लेकिन एक पौइंट है जहां वह अपनी लिमिट क्रौस करता है. जो कभीकभी उसे जोए रीगन जैसा शेड भी देती है, जो विवादित है.

–रोहित ●

ट्रैवल इन्फ्लुएंसर्स की ऊपरी चमकदमक

माही शर्मा

ट्रैवल इन्फ्लुएंसर माही शर्मा का कंटैंट सोलो ट्रैवल और यात्रा के जरिए आत्मनिर्भरता व पर्सनल डैवलपमैंट पर जोर देता है. उन की पोस्ट में सोलो ट्रैवल को अकसर रोमांटिक और परफैक्ट अनुभव के रूप में दिखाया जाता है.

सृष्टि

सृष्टि का कंटैंट ज्यादातर पहाड़ों और एडवैंचर पर केंद्रित होता है जिस के चलते कई व्यूअर्स, जो सामान्य ट्रैवल का अनुभव चाहते हैं, को कनैक्ट करना मुश्किल लगता है.

आकांक्षा मोंगा

ट्रैवल इन्फ्लुएंसर आकांक्षा मोंगा अपनी एलिगेंट ट्रैवल फोटोग्राफी और इन्फौर्मेटिव ट्रैवल गाइड्स के लिए जानी जाती हैं. लेकिन इन का कंटैंट अकसर इतना हाई बजट और लग्जरी यात्राओं पर आधारित होता है कि वह एवरेज व्यूअर्स के लिए प्रेरणादायक तो हो सकता है लेकिन प्रैक्टिकल नहीं.

बरखा सिंह

मशहूर ट्रैवल इन्फ्लुएंसर बरखा सिंह कल्चर, खानपान को सामने लाती हैं. इन के महंगे होटल्स, रैस्टोरैंट्स और एक्टिविटीज अकसर व्यूअर्स को यह सोचने पर मजबूर करती हैं कि ट्रैवलिंग केवल अमीरों के लिए है.

अंकिता कुमार

ट्रैवलिंग कम्युनिटी में एक अलग पहचान रखती अंकिता कुमार अपने मजेदार और एडवैंचर से भरी ट्रैवल स्टोरीज को हास्य के साथ साझा करने के लिए जानी जाती हैं. इन की पोस्ट अकसर हलकेफुलके अंदाज की होती हैं.

राधिका नोम्लर्स

अपने रोमांचक ट्रैवल एडवैंचर्स और पर्सनल एक्सपीरिएंस के कारण राधिका नोम्लर्स अपने व्यूअर्स के साथ डीपली कनैक्ट हो पाती हैं. लेकिन कभीकभी पर्सनल एक्सपीरिएंस की उन की पोस्ट्स इतनी लंबी हो जाती हैं कि जो फिर रोचक नहीं रह पातीं.

शरुया अय्यर

इन्फ्लुएंसर शरुया अय्यर अपनी आर्ट और स्टोरीज की पोस्ट्स से साबित करती हैं कि महिलाएं अकेले यात्रा कर सकती हैं, साथ ही, वे अपने सपनों को साकार भी कर सकती हैं. माना जाता है कि वे अपने फौलोअर्स के साथ सोलो ट्रैवलिंग की चुनौतियों और संघर्षों को पूरी तरह शेयर नहीं करतीं.

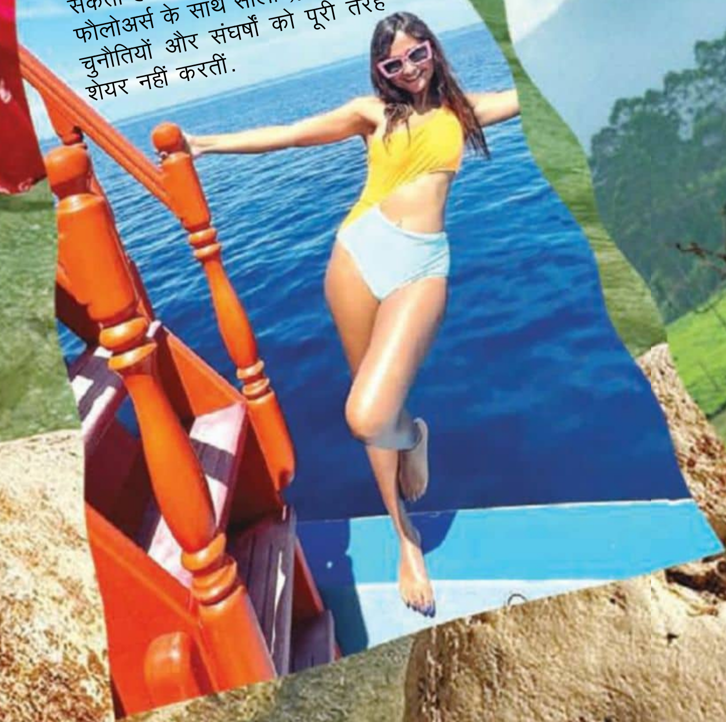

सूर्या

इन्फ्लुएंसर सूर्या के कंटैंट में डैस्टिनेशन की लोकल कल्चर, हिस्ट्री और परंपराओं का जिक्र नहीं मिलता.

ब्रिंदा शर्मा

क्रिएटिविटी और एनर्जी से भरपूर ब्रिंदा शर्मा अपने वाइब्रैंट ट्रैवल कंटैंट और दिलचस्प ब्लौग्स के लिए पौपुलर हैं. लेकिन कभीकभी उन के कंटैंट में ट्रैवल प्लेस की गहराई से जानकारी नहीं होती और अकसर उन के ब्लौग्स व पोस्ट्स में बारबार एकजैसा पैटर्न देखने को मिलता है.

–किरण ●

1082343

क्यों कन्फ्यूज्ड हैं जेनजी और मिलेनियल्स

कभी वीकैंड पर पार्टी, कभी विदेशी ट्रिप्स तो कभी नए गैजेट्स का जनून. लेकिन क्या यह जेनजी और मिलेनियल्स की खुशी की गारंटी है? आज का यूथ दिशाविहीन क्यों है और उस का हर 'फन' क्यों बनता जा रहा है 'फ्रस्ट्रेशन'?

26 साल का यंग आईटी प्रोफैशनल का ईयरली पैकेज 50 लाख रुपए, फिर भी वह सैटिस्फाइड नहीं है. वह हर साल जौब बदलता है. उस की लाइफ में पर्सनल रिश्तों की कोई जगह नहीं है. वीकैंड पर पार्टी करना, औफिस क्लीग्स के साथ हैंगआउट, हर 2–3 महीने में महंगा फोन लेना, साल में 3–4 बार फौरेन ट्रिप्स, हर दूसरे साल गाड़ी बदलना फिर भी वह जिंदगी से बोर हो गया है, खुश नहीं है.

एनर्जेटिक, इम्पेशेंट, केयरलैस, टैकसेवी, स्मार्ट, रिबेलियस, एमलैस, कन्फ्यूज्ड, एनर्जी ज्यादा पेशेंस कम, फिजिकल और मैंटल हैल्थ आदि सारे फीचर जेनजी जो 1997 से 2012 के बीच पैदा हुए. मिलेनियल्स वह जनरेशन है जो 1981 से 1996 के बीच पैदा हुए, जिसे पता नहीं मैं क्या करूं, कैसे खुशी हासिल करूं वगैरह. इन्हें जेनवाई भी कहा जाता है.

आज के यूथ से अगर पूछा जाए कि उन के लाइफ के गोल्स क्या हैं तो वे बोलेंगे कि उन के पास कोई लिस्ट औफ गोल्स नहीं है. सोचिए, कितनी ऐमलैस है आज की जेनरेशन. यही वजह है कि वह हमेशा स्ट्रैस में रहती है. सारी सुविधाओं के बावजूद भी वह खुश नहीं है.

यूथ को यह समझना होगा कि टारगेट बनाने से ही सफलता हासिल की जा सकती है. जैसे, अगर कोई रेलवे स्टेशन के काउंटर पर टिकट लेने के लिए पहुंचता है, काउंटर पर बैठा व्यक्ति उस से पूछता है, 'कहां का टिकट चाहिए?' तो वह कहता है, 'कहीं का भी दे दो.' और टिकट न मिलने पर और वह कहीं भी नहीं पहुंच पाता.

जब किसी को किसी जगह जाने के बारे में उसे सारी जानकारी होती है कि कौन सी ट्रेन जाएगी, कितने बजे जाएगी, सीट नंबर क्या है तो सफर सुहाना और मंजिल तक पहुंचना आसान होता है लेकिन जब जिंदगी के गोल्स क्लियर नहीं होते तो कहीं भी पहुंचा नहीं जा सकता.

यही हाल युवाओं का है. गैलरी में ढेरों फोटोज हैं लेकिन प्रोफाइल पिक के लिए कोई अच्छी नहीं लग रही. एक ही एंगल की दसियों फोटो हैं और कन्फ्यूज्ड हैं कि अच्छी कौन सी है. हर थोड़े दिनों में लाइफ जीने का तरीका बदल रहे हैं, रिस्क लेने को तैयार नहीं हैं, इनफौर्मेशन है, कन्फर्ट है फिर भी खुश नहीं. सोशल मीडिया में लाइक्स और कमैंट पर ही सारा ध्यान है.

लक्ष्य जिंदगी में उद्देश्य और दिशा देते हैं और बताते हैं कि क्या और कैसे हासिल करना है व किस दिशा में काम और मेहनत करनी है.

पेरैंट्स की सोच बदलना जरूरी

हमारी जेनजी के पेरैंट्स बचपन से वे सपने देखते हैं जो वे खुद पूरे नहीं कर पाए. बच्चों के लिए पूरी जिंदगी कुर्बान कर देते हैं इस चाह में कि बच्चे उन का नाम रोशन करेंगे. यह एक तरह का दबाव बनाता है. इस से बच्चों के दिमाग में हर समय प्रेशर हावी रहता है और बच्चे उसी दिशा में जुट जाते हैं.

10वीं में अच्छे नंबर मिठाई, तारीफें; 12वीं में भी यही. इस के बाद प्रतियोगी परीक्षा में सफलता में या कैंपस सेलैक्शन से और ज्यादा खुशी. अच्छी सैलरी, घरपरिवार से दूरी, अकेलापन आदि सब से युवाओं की मैंटल हैल्थ पर बुरा प्रभाव पड़ता है. पेरैंट्स को समझना

होगा कि वे अपनी अपेक्षाएं बच्चों पर न थोपें. जिस फील्ड में उन की रुचि और टैलेंट है वह फील्ड उन्हें चुनने दें, मतलब उस पर बड़ा आदमी बनने का अपना ख्वाब न थोपें. खुश कैसे रहना है, उसे यह सिखाएं.

यूथ को दिशाहीन बनाने में सब से ज्यादा जिम्मेदार पेरैंट्स, मीडिया, सिनेमा और राजनीति है. देश में एक भी ऐसा नेता और संत नहीं जिस का आचरण यूथ को प्रेरित करता हो. हमारे समाज में जन्मपत्री देखने वाले, तांत्रिक, झोलाछाप डाक्टर, पूजापाठ कराने वाले पाखंडी समाज में बड़ी शान से कमाई कर रहे हैं जबकि यूथ स्ट्रैस, अकेलेपन, गुस्सा, डिप्रैशन जैसी मानसिक बीमारियों के शिकार हो रहे हैं.

दुनिया में हुए अधिकतर सर्वे कहते हैं कि मिलेनियल्स सब से अनफिट जेनरेशन है और फिजिकल ही नहीं, मैंटल हैल्थ भी इन के लिए एक बड़ा कन्सर्न है. इस से बुरा हाल जेनजी का है. ये दोनों जेनरेशन डिप्रैशन, कैफीन डिसऔर्डर, गेमिंग डिसऔर्डर से भी जूझ रही हैं.

क्यों कन्फ्यूज्ड है यूथ

- किसी भी बात में बहुत जल्दी निर्णय लेना.
- किसी के बारे में बहुत जल्दी एक सोच बना लेना.
- पेशेंस की कमी होना.
- हर चीज में प्रैक्टिकल होना.
- हर किसी को एक ही तराजू पर तोलना.
- दूसरों की गलती से न सीखना.
- बहुत जल्दी किसी पर यकीन कर लेना.
- प्लान ए के फेल होने पर प्लान बी का न होना.
- प्रैशर न झेल पाना.
- सबकुछ अपने तरीके से करना.
- किसी की न सुनना.

यूथ हर किसी को देख कर आकर्षित हो जाता है. उसे अपना रोलमौडल मान लेता है. बिना अपनी क्षमता को पहचाने, उस के जैसा बनने की चाहत रखने लगता है. वह अपने मार्ग से भटक जाता है और उसे अपना जीवन बेकार लगने लगता है. यूथ को एक ही दिन में प्यार हो जाता है और फिर कुछ हफ्तों में वे रिश्ते खत्म हो जाते हैं, उबासी और बासीपन छा जाता है.

जिस नौकरी को पाने के लिए मशक्कत करता है, कुछ समय बाद उसी नौकरी से नफरत करता है और अपने सपनों, अपनी खुशियों पर काम करने के बजाय स्ट्रैस में आ कर जंक फूड खाते, नशा करते हुए वैब सीरीज देखने में लग जाता है. कुछ बड़ा करना तो चाहता है, लेकिन इंस्टाग्राम, फेसबुक पर समय बरबाद करता है.

गैरजिम्मेदार सरकार

देश की करीब आधी आबादी 25 वर्ष से कम उम्र वाले युवाओं की है मगर महत्त्वपूर्ण सवाल यह है कि क्या हमारे जनप्रतिनिधि, हमारी सरकार युवाओं के लिए कुछ करने के लिए गंभीर हैं? क्या सरकार युवाशक्ति का, उन की ऊर्जा का, उन के समय का सदुपयोग करने पर कोई काम कर रही है?

सिर्फ आईआईटी, आईआईएम व नैशनल यूनिवर्सिटीज खोल कर दे देने भर से युवा देश में सक्रिय भूमिका में आ जाएंगे, ऐसा नहीं है. हर साल करीब एक से डेढ़ लाख छात्र एमबीए और इस के आधे इंजीनियरिंग कर के बेरोजगार घूम रहे हैं.

देश में सिर्फ 20 फीसदी ग्रेजुएट्स को ही रोजगार मिलता है. बाकी बचे 80 फीसदी बेरोजगार राजनीतिक रैलियों में कुछ पैसों के लिए जिंदाबादमुर्दाबाद करते हैं. लोकल राजनीति भी इस के लिए कम जिम्मेदार नहीं है. चुनावी सीजन में हर नेता को इन फेसबुकिया यूथ की टीम चाहिए होती है जो उन के लिए जिंदाबाद के नारे लगाती रहे, किसी की तारीफ तो किसी को ट्रोल करे. इस सब से नेताजी का भविष्य तो सुरक्षित हो जाता है पर यूथ का भविष्य चौपट हो जाता है.

यूथ को बरबाद करता सोशल मीडिया

एक सर्वे के हिसाब से इस साल की शुरुआत तक करीब 200 मिलियन यानी 20 करोड़ युवा फेसबुक, इंस्टाग्राम, व्हाट्सऐप का इस्तेमाल करते हैं और इस का रिजल्ट साइबर क्राइम, ड्रग एडिक्शन, आभासी रिश्ते बनाने के रूप में सामने आ रहा है. युवाओं की जिंदगी मशीनी होती जा रही है. समाज में फैले अपराध खासकर साइबर अपराध, हिंसा, साजिश, धोखे में युवा जानेअनजाने संलिप्त हो रहे हैं. बिना मेहनत के मिली सुविधाओं और आधुनिकता के कारण उन्होंने जिंदगी को मजाक समझ लिया है.

रिस्क लेना सीखे यूथ

अगर कुछ बड़ा करना है तो रिस्क और जोखिम लेने ही होते हैं. हमारे परिवारों में अगर बच्चा रूटीन से अलग कैरियर चुनने की बात घर वालों से कहता है तो वे उसे डराते हैं, उस का साथ नहीं देते क्योंकि उन्होंने खुद कभी रिस्क नहीं उठाया होता.

अगर कुछ नया करना है और बड़ा करना है तो रिस्क लेना ही एकमात्र तरीका है. यूथ को यह समझना होगा कि बिना रिस्क के कुछ नहीं मिलता और पैरेंट्स को इस में उन का साथ देना होगा.

—ललिता ●

MAGAZINES IN
9
LANGUAGES
FOR ADULTS AND CHILDREN

PUBLISHING MOST POPULAR MAGAZINES SINCE 1939: READ EVERY ISSUE

With virtually every age group, income segment and language covering 30 million Indians, we are the most diverse magazine group in India. So if you want to read magazine that informs & entertains buy one from Delhi Press Group today.

DELHI PRESS

Scan and subscribe to our magazines

Call/SMS/WhatsApp: 08588843408

E-mail: subscription@delhipress.in, You can also subscribe online at www.delhipress.in/subscribe

लेख
● किरण आहूजा

एडिन रोज की 'गंदी बात'

एडिन रोज ने भारतीय वैब सीरीज और साउथ इंडियन सिनेमा तक का सफर तय किया है. अब 'बिग बौस 18' में वाइल्ड कार्ड कंटेस्टैंट के रूप में उन की एंट्री ने उन्हें फिर से सुर्खियों में ला दिया है.

एडिन रोज एक फेमस मौडल, हीरोइन और सोशल मीडिया सैलिब्रिटी हैं. एडिन ने 20 साल की उम्र में दुबई से मुंबई आ कर कैरियर शुरू किया. एडिन ने वैब सीरीज 'गंदी बात' के सीजन–4 में काम किया. इस सीरीज में उन्होंने बोल्डनैस की हद पार कर दी थी. एडिन ने 2023 में तेलुगू फिल्म 'रवणासुर' में एक आइटम सौंग से पहचान बनाई. एडिन ने वैब सीरिज 'गुड गर्ल्स–ब्राइड्स नाइट' और शौर्ट मूवी 'हैल्प मी' में भी काम किया है.

एडिन रोज सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं, विशेषकर इंस्टाग्राम पर जहां उन के 7 लाख से अधिक फौलोअर्स हैं. वह रैगुलर अपनी फिटनैस, फैशन और पर्सनल लाइफ से जुड़ी तस्वीरें और वीडियो शेयर करती हैं.

उन की इंस्टाग्राम गतिविधियों और 'बिग बौस सीजन 18' में उन की वाइल्ड कार्ड एंट्री ने इन्हें और भी पौपुलर बना दिया है, जिस से इन की फैन फौलोइंग तेजी से बढ़ रही है.

क्रिटिक अकसर इन्हें स्क्रिप्टेड या ओवर द टौप कहते हैं जो इन की इमेज को रियलिटी से दूर करता है.

फिल्मों और वैब सीरिज में उन के काम की सीमित लोकप्रियता उन के कैरियर ग्राफ पर सवाल उठाती है. खैर, एडिन रोज की यात्रा अभी शुरू हुई है. उन के एडमायर बेसब्री से उन के अगले कदम का इंतजार कर रहे हैं. ●

अदिति मिस्त्री
सोशल मीडिया सैंसेशन

अदिति मिस्त्री एक मौडल और सोशल मीडिया इन्फ्लुएंसर हैं, जिन्होंने अपने आकर्षक लुक और फिटनैस से लोगों के बीच अपनी पहचान बनाई. उन की खूबसूरती और बोल्डनैस ने उन्हें इंटरनैट पर लोकप्रिय बना दिया. हाल ही में उन्होंने चर्चित रियलिटी शो 'बिग बौस' में वाइल्ड कार्ड एंट्री के रूप में प्रवेश किया, लेकिन उन का सफर वहां ज्यादा लंबा नहीं चला.

अदिति बचपन से ही फैशन और ग्लैमर की दुनिया में कदम रखना चाहती थीं. अदिति मिस्त्री ने अपने कैरियर की शुरुआत एक मौडल के रूप में की. उन्होंने कई स्थानीय ब्रैंड्स के लिए फोटोशूट किए और धीरेधीरे बड़ी कंपनियों के साथ काम करने लगीं. फिटनैस और हैल्थ को ले कर उन की गंभीरता ने उन्हें एक फिटनैस मौडल के रूप में भी स्थापित किया.

अदिति को खास पहचान उन के सोशल मीडिया अकाउंट्स से मिली, जहां वह नियमित रूप से अपनी बोल्ड और ग्लैमरस तस्वीरें शेयर करती हैं. उन के इंस्टाग्राम अकाउंट पर लाखों फौलोअर्स हैं, जो उन की हर पोस्ट का बेसब्री से इंतजार करते हैं. अदिति मिस्त्री सोशल मीडिया पर काफी सक्रिय हैं. वह अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर फिटनैस टिप्स, जिम वर्कआउट वीडियो, फैशन फोटोशूट और लाइफस्टाइल से जुड़े कंटैंट शेयर करती हैं. उन के फौलोअर्स उन की फिटनैस जर्नी से प्रेरणा लेते हैं. उन की बोल्ड और ग्लैमरस तस्वीरों ने उन्हें इंटरनैट सैंसेशन बना दिया है. हालांकि कई बार उन्हें ट्रोलिंग और आलोचना का भी सामना करना पड़ा है.

अदिति मिस्त्री इंस्टाग्राम पर अपनी रील्स के कारण हमेशा चर्चा में रहती हैं. उन के बोल्ड अंदाज, फैशन सैंस और कौन्फिडैंस ने उन के 30 लाख फौलोअर्स बना दिए हैं.

पिछले दिनों इन्होंने अपने गोवा वैकेशन की रील इंस्टा पर शेयर की थी. इस में वह स्टाइलिश लुक में नजर आ रही थीं. रील में मस्ती का माहौल दिख रहा था. दोस्तों के साथ मस्ती करते हुए अदिति के नैचुरल रिएक्शंस और खुशमिजाज अंदाज ने फौलोअर्स को जोड़े रखा. बैकग्राउंड म्यूजिक व सौंग सलैक्शन ने रील की वाइब को परफैक्ट बना दिया लेकिन रील की लैंथ ज्यादा थी. छोटे व क्रिस्प वीडियोज व्यूअर्स को ज्यादा पसंद आते हैं. इस के साथ अदिति फिल्टर का बहुत ज्यादा यूज करती हैं.

अदिति ने फिटनैस मोटिवेशन के लिए कई रील्स पोस्ट की हैं. इन रील्स में वह जिम करती नजर आ रही हैं जिस में वह काफी बोल्ड दिखती हैं. फिटनैस को ले कर उन का पैशन झलकता है.

उन की कई रील्स कैजुअल लुक्स और डेली आउटफिट स्टाइलिंग पर आधारित है. वे अलगअलग आऊटफिट्स में रैंपवौक स्टाइल में नजर आती हैं. उन्होंने अपने कौन्फिडैंस और पोज देने के स्टाइल से कमाल कर दिया.

अदिति अपने अधिकतर रील्स में बोल्ड एंड ब्यूटीफुल दिखती हैं. नौर्मल मेकअप और ग्लैमरस ड्रैस के साथ उन्होंने अपने चार्म से फैंस को हैरान कर दिया है. लेकिन कभीकभी उन का लुक ओवरडोज लगता है. वह ओवर एक्सपोजिंग भी हैं.

अदिति मिस्त्री की इंस्टाग्राम रील्स उन की पर्सनैलिटी, फैशन सैंस और कौन्फिडैंस साफ झलकता है. हालांकि उन्हें अपने कंटैंट में काम करने की जरूरत है ताकि वे लंबे समय तक व्यूअर्स को अट्रैक्ट कर सकें.

बिग बौस में एंट्री

अदिति मिस्त्री ने 'बिग बौस' के हालिया सीजन में वाइल्ड कार्ड कंटैस्टैंट के रूप में प्रवेश किया. उन की एंट्री को ले कर दर्शकों में उत्साह था, लेकिन शो में उन का सफर काफी छोटा रहा. अदिति शो में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज नहीं करा पाईं.

उन के खेल की रणनीति कमजोर मानी गई और वह विवादों से भी दूर रहीं, जो 'बिग बौस' जैसे शो के लिए महत्त्वपूर्ण होता है. अदिति को शो में खुद को साबित करने का पर्याप्त समय नहीं मिल सका, जिस से उन्हें जल्द ही बेघर कर दिया गया. अदिति मिस्त्री की सब से बड़ी आलोचना उन की 'बिग बौस' में खराब परफौर्मैंस को ले कर हुई. दर्शकों को उन से काफी उम्मीदें थीं, लेकिन वह शो में कोई खास छाप नहीं छोड़ सकीं. उन की पर्सनैलिटी और लुक्स भले ही आकर्षक हों, लेकिन शो में उन का व्यवहार और रणनीति कमजोर साबित हुई.

कुछ दर्शकों ने उन की सोशल मीडिया इमेज को उन की असल पर्सनैलिटी से अलग बताया. ग्लैमरस छवि होने के बावजूद उन्हें 'बिग बौस' जैसे शो में टिकने के लिए अधिक दमदार और आत्मविश्वासी होना चाहिए था. शो में उन के निष्क्रिय रवैये के कारण दर्शकों ने उन्हें उबाऊ करार दिया.

'बिग बौस' से बाहर निकलने के बाद अदिति मिस्त्री ने सोशल मीडिया पर एक इमोशनल पोस्ट लिख कर अपने फैंस का शुक्रिया अदा किया. उन्होंने कहा कि वह अपने अनुभवों से बहुतकुछ सीख कर वापस लौटी हैं और भविष्य में बेहतर प्रदर्शन करेंगी. अदिति मिस्त्री का कैरियर मौडलिंग और सोशल मीडिया की दुनिया में भले ही सफल हो, लेकिन 'बिग बौस' में उन का अनुभव निराशाजनक रहा. इस छोटे से सफर ने उन्हें यह सिखाया होगा कि शोबिज की दुनिया में टिके रहने के लिए केवल ग्लैमर और लुक्स ही नहीं, बल्कि आत्मविश्वास और मजबूत रणनीति भी जरूरी है. उम्मीद है कि अदिति अपनी गलतियों से सबक ले कर आने वाले समय में अपने कैरियर को नई ऊंचाइयों तक ले जाएंगी.

–किरण कश्यप ●

इंट्रैस्टिंग फैक्ट्स

कोबेर पेडी, आस्ट्रेलिया

यह शहर आस्ट्रेलिया के रेगिस्तान में स्थित है और यहां गरमी इतनी अधिक होती है कि लोगों ने जमीन के नीचे घर बना लिए हैं. यहां के लोग भूमिगत सुरंगों में रहते हैं, जो उन्हें गरमी से बचाती हैं.

थम्स, न्यूजीलैंड

इस शहर में आप को अजीबोगरीब डाक टिकट देखने को मिल सकते हैं. यहां के लोग अपने जूतों को पुलों पर टांग देते हैं, जिस से पूरा शहर अजीब जूतों से सजा हुआ नजर आता है.

अल्बर्टा, कनाडा (वेगरेविल)

इस छोटे से शहर में एक विशाल ईस्टर एग (अंडे) की मूर्ति है जिसे 'पीस का प्रतीक' कहा जाता है. इसे यूक्रेनी प्रवासियों के सम्मान में बनाया गया था और यह दुनिया का सब से बड़ा ईस्टर अंडा है.

बोइगनहेट्स, स्कोटलैंड

यहां की हवाओं और ठंड के कारण स्थानीय लोग अजीब और बड़े कपड़े पहनते हैं. यह एक फिशिंग टाउन है और यहां 'गल्लुस' नामक एक विशेष नृत्य होता है, जिसे स्थानीय लोग अजीब हावभाव के साथ करते हैं.

सेंट्रलिया, पेनसिल्वेनिया, यूएसए

यह एक 'घोस्ट टाउन' है क्योंकि यहां की खदानों में आग लग गई थी, जो आज भी जल रही है. यहां के लोग आग की वजह से शहर छोड़ चुके हैं, लेकिन कुछ घर और सड़कें अभी भी देखी जा सकती हैं.

रोसवेल, न्यू मैक्सिको, यूएसए

रोसवेल अजीब घटनाओं और एलियंस के कथित रहस्यमयी दृश्यों के कारण प्रसिद्ध है. यहां हर साल 'यूएफओ फैस्टिवल' का आयोजन होता है, जहां लोग एलियंस और अंतरिक्ष यात्रा के बारे में बात करते हैं.

गिब्सटन, न्यूजीलैंड

यहां का मौसम अकसर ठंडा रहता है और यहां 'हैंगमनाय' नामक उत्सव मनाया जाता है जिस में लोग जम कर शराब पीते हैं और खुद को गरम रखने के लिए आग के चारों ओर नाचते हैं.

अम्बरग्रिस, बेलीज

यह एक समुद्री शहर है जहां की खास बात यह है कि यहां की मछलियां लोगों के बीच रहती हैं. लोग यहां मछलियों के साथ दोस्ताना तरीके से रहते हैं और यहां डौल्फिन्स के साथ तैरना भी आम है.

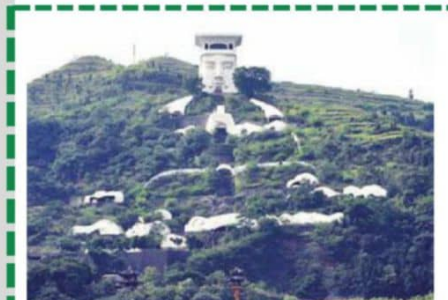

फारग्ला, चीन

यह एक रहस्यमय शहर है, जहां चीनी सरकार द्वारा 'रहस्यमयी टैस्टिंग' की जाती है. इसे 'चाइनीज एरिया 51' के नाम से भी जाना जाता है और यहां बाहरी लोगों का आना प्रतिबंधित है. –प्रतिनिधि ●

आप की समस्याएं

कालेज में एडमिशन के बाद मुझे एक लड़के से प्यार हो गया. वह भी मुझ से प्यार करता है, लेकिन मेरे साथ दिक्कत यह है कि जब कोई स्मार्ट लड़का मेरे सामने आता है तो मेरा दिल हिलोरें मारने लगता है और फिर में सोचने लगती हूं कि काश यह लड़का मेरे से पट जाए. उस दौरान मुझे मेरा प्रैजेंट बौयफ्रैंड याद नहीं आता. कहने का मतलब है कि मुझे एक से मन बहुत जल्दी भर जाता है. मुझे ऐसी स्थिति में क्या करना चाहिए?

हम सभी के जीवन में कभी न कभी ऐसा होता है कि हम एक से अधिक लोगों के प्रति आकर्षण महसूस करते हैं. यह केवल भावनाओं की लहर है जो समयसमय पर आती है. जब हम इन भावनाओं को समझने की कोशिश करते हैं तो हमें यह पहचानने की आवश्यकता होती है कि क्या यह सिर्फ आकर्षण है या कुछ गहरा और परमानैंट है.

सच्चा प्यार समय और परिपक्वता के साथ विकसित होता है. जब आप किसी से प्यार करती हैं तो यह केवल आकर्षण नहीं होता, बल्कि यह एक गहरी भावना होती है जो उन के साथ बिताए गए समय और अनुभवों से जुड़ी होती है. यदि आप का पहला प्रेमी आप के लिए सच्चा है तो आप को उस की अहमियत को समझना होगा और समय के साथ अपने रिश्ते को और मजबूत करना होगा.

कभीकभी कोई दूसरा स्मार्ट लड़का सामने आता है तो आप का दिल मचलने लगता है, लेकिन सच्चा प्यार वह है जो समय के साथ बढ़ता रहे, मजबूत रहे. अगर आप का बौयफ्रैंड आप की जिंदगी का हिस्सा है तो जरूरी है कि आप उस के साथ रिश्ते को बनाए रखें और किसी भी तात्कालिक आकर्षण को अपने प्यार पर हावी न होने दें.

आखिर में हम तो यही चाहते हैं कि आप अपनी भावनाओं को समझें और सच्चे प्यार का मूल्य जानें. एक बात और हो सकती है कि कहीं आप को अपने बौयफ्रैंड में कोई कमी तो महसूस नहीं हो रही? पूरी तरह उस से संतुष्ट नहीं हैं? यदि आप को लगता है कि आप अपने रिश्ते में स्थिरता नहीं पा रही हैं या आप की भावनाएं बदल रही हैं तो यह अच्छा होगा कि आप अपने बौयफ्रैंड से इस बारे में खुल कर बात करें.

अगर आप को लगता है कि आप अपनी भावनाओं पर नियंत्रण नहीं रख पा रही हैं तो थोड़ा समय लें और इस पर सोचें. अपने इमोशंस के उतारचढ़ाव को समझने में समय लगता है, लेकिन यह जरूरी है कि आप खुद को समझें और जो सही लगे, वही करें.

मेरी गर्लफ्रैंड मेरी फीमेल फ्रैंड्स से बात नहीं करने देती. वह चाहती है कि दिनरात केवल मैं उस से बातें करूं. उस की इस आदत की वजह से मेरा फ्रैंड्स सर्किल खत्म होता जा रहा है. मैं अकेलापन महसूस करने लगा हूं. मुझे क्या करना चाहिए?

एक रिश्ते में दोनों पार्टनरों को स्वतंत्रता और पर्सनल स्पेस की आवश्यकता होती है. यह जरूरी नहीं कि आप केवल एकदूसरे के साथ समय बिताएं, बल्कि यह भी महत्त्वपूर्ण है कि आप अपने दोस्तों और परिवार के साथ भी वक्त बिताएं. यह न केवल आप के मानसिक स्वास्थ्य के लिए अच्छा है बल्कि यह रिश्ते में ताजगी और नयापन भी बनाए रखता है.

आप की स्थिति में सब से महत्त्वपूर्ण कदम अपनी भावनाओं को अपनी गर्लफ्रैंड के सामने क्लियर रूप से रखना है. आप के जीवन में दोस्तों और अन्य रिश्तों का महत्त्वपूर्ण स्थान है, यह बात गर्लफ्रैंड को शांति और समझदारी से समझाएं न कि किसी विवाद या गुस्से से.

आप का यह जानना भी जरूरी है कि आप की गर्लफ्रैंड ऐसा व्यवहार क्यों कर रही है? क्या वह इस बात से डरती है कि आप उस की जगह किसी और को दे देंगे? आप पर भरोसा नहीं? आप को खोने से डरती है?

अगर उस की चिंता का कारण असुरक्षा है तो आप को उसे विश्वास दिलाना जरूरी है कि वह सब से महत्त्वपूर्ण है, लेकिन फिर भी आप की अपनी पर्सनल स्पेस चाहिए. आप उसे अपना पूरा समय देंगे लेकिन आप को अपनी स्वंतत्रता और दोस्तों से बातचीत का पूरा अधिकार है.

याद रखें कि आप की खुशी और मानसिक शांति सब से महत्त्वपूर्ण है. अगर वह प्रभावित हो रही है तो आप को गर्लफ्रैंड के साथ अपने रिश्तों पर पुन: विचार करने की आवश्यकता है.

2 साल तक हम लोगों का अफेयर ठीक चला. उस के बाद बौयफ्रैंड से मेरा ब्रेकअप हो गया. इस बीच में न ही कभी फोन पर बात की न ही व्हाट्सऐप किया. अचानक से एक दिन कालेज कैंपस में बौयफ्रैंड से फिर मुलाकात हो गई. फिर वह मेरे पीछे पड़ गया कि गलती हो गई और आगे अब ऐसा नहीं होगा लेकिन मुझे अब समझ नहीं आ रहा कि बौयफ्रैंड के साथ में आगे बढ़ूं या हमेशा के लिए मना कर दूं?

इस स्थिति में आप को अपने दिल और दिमाग दोनों की सुननी होगी ताकि आप सही निर्णय ले सकें. यदि आप का बौयफ्रैंड कहता है कि उसे अपनी गलती का एहसास हुआ है और वह आगे ऐसा नहीं करेगा तो यह जरूरी है कि आप यह समझें कि वह खुद को बदलने के लिए कितना तैयार है. क्या उस ने सच में उस समय जो गलतियां की थीं, उन से कुछ सीखा है या फिर वह सिर्फ बातों से आप को पाना चाहता है?

अगर आप महसूस करती हैं कि बौयफ्रैंड सच में बदल चुका है तो एक और मौका दे सकती हैं. दूसरी तरफ, अगर आप को लगता है कि वह अपनी पुरानी आदतों से बाहर नहीं निकल सकता और वह फिर से आप को धोखा दे सकता है तो यह बेहतर होगा कि आप उसे हमेशा के लिए मना कर दें. सब से महत्त्वपूर्ण बात यह है कि किसी भी निर्णय से पहले खुद से ईमानदारी से यह सवाल पूछें कि क्या यह रिश्ता आप के जीवन में खुशियों और संतोष का कारण बनेगा या फिर आप को केवल और दुख दे सकता है.

यह निर्णय आप के जीवन की दिशा तय करेगा इसलिए इसे सोचसमझ कर और आत्ममंथन के बाद लिया जाना चाहिए. ●

SMS/WHATSAPP +918527666772

आप अपनी प्रेम समस्याएं, संपादकीय विभाग, मुक्ता, दिल्ली प्रेस भवन, ई-8, रानी झांसी मार्ग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 पर भेजें. SMS/Whatsapp से भी भेज सकते हैं. ईमेल द्वारा mukta@delhipress.in पर भेजें. नाम गुप्त रखा जाएगा.

कपल्स रोमांटिक डेट गेम्स

कपल्स के लिए डेट नाइट्स सिर्फ फिल्में देखने या डिनर पर जाने तक सीमित नहीं रह गई हैं. कपल्स आजकल अपनी डेट नाइट्स में मस्ती, रोमांच और अलगअलग ऐक्टिविटीज का तड़का लगाना पसंद करते हैं. यही कारण है कि रोमांटिक गेम्स का चलन बढ़ रहा है. ये गेम्स न केवल प्यार को गहराई में ले जाते हैं बल्कि रिश्ते में ताजगी और मजा भी भरते हैं.

आइए, जानते हैं कुछ अनोखे व मजेदार गेम्स के बारे में जो आप के रिश्ते में स्पार्क ला सकते हैं.

डेजर्ट की तरह सजें

डेजर्ट कौन है? जाहिर है, आप. और किस के लिए? अपने पार्टनर के लिए. इस खेल में आप को खानेपीने की चीजों से खुद को सजाना होगा. खासतौर पर ऐसी चीजें जो आप के पार्टनर को पसंद हों, क्योंकि अंत में उन्हें ये सब खा कर खत्म करना है.

ये चीजें फल जैसे स्ट्राबैरी और चैरी के साथ चौकलेट, सौस और क्रीम हो सकती हैं. टौपिंग्स के बारे में भी सोचें. जब आप रोमांटिक रात के लिए तैयार हों तो खुद को एक सुंदर डेजर्ट की तरह सजाएं और अपने पार्टनर को इस मिठास में डूबने के लिए आमंत्रित करें.

पार्टनर की मसाज

अपने पार्टनर की मसाज करें. यह रिलैक्स और प्लेजर तो फील करेगा ही, साथ में रोमांटिक भी महसूस कराएगा. इस के लिए थोड़े फ्रैगरेंस वाले लोशन या मसाज औयल की जरूरत है और धीरेधीरे रोमांटिक मूड के साथ पार्टनर की बौडी पर अप्लाई करें.

रोमांटिक कहानी पढ़ना

लोगों की रीडिंग हैबिट खोती जा रही है, लेकिन रोमांटिक स्टोरीज रीड करते हुए कपल उन पलों का आनंद ले सकते हैं. ऐसी बहुत सी मैगजींस हैं जिन में रोमांटिक कपल स्टोरीज पब्लिश होती हैं. यह एक सरल गेम है, जिस में जो सब से अच्छी स्टोरी सुनाएगा उसे बदले में अपने पार्टनर की फरमाइश पूरी करनी होगी.

म्म्म और आह्ह्ह

इस गेम में आप और आप के पार्टनर बारीबारी से एकदूसरे के शरीर को हाथों और होंठों से एक्सप्लोर करते हैं और अलगअलग बौडी पार्ट को छूते हैं. इस में पार्टनर को केवल 'म्म्म' और 'आह्ह्ह' की आवाजों के जरिए अपनी फीलिंग्स व्यक्त करनी होती है. यह गेम आप को यह जानने में मदद करेगा कि आप के पार्टनर को कहां छूना अच्छा लगता है.

नेक्ड कुकिंग

नेक्ड कुकिंग मजेदार गेम हो सकती है, जहां आप दोनों रसोई में बिना कपड़ों के समय बिताते हुए खाना बनाते हैं. कपल मिल कर एक केक बेक कर सकते हैं या सब्जियां ग्रिल कर सकते हैं. टाइमर सैट करने के बाद यह समय कुछ रोमांटिक और हौट पलों के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है.

डर्टी चाड्र्स

डर्टी चाड्र्स एक गेम है जो पारंपरिक चाड्र्स से बिलकुल अलग है. इस में पार्टनर को संकेत देने के लिए थोड़ी मस्ती, नौटी और हौट ऐक्टिंग करनी होगी. यह गेम एकदूसरे को बिना शब्दों के समझने का मौका देगा.

बोल्ड ट्रुथ

बोल्ड ट्रुथ गेम एक नौटी और इंटिमेट गेम है. इस में कपल एकदूसरे से साहसी और रोमांटिक सवाल पूछ सकते हैं, जैसे कि सब से रोमांचक जगह जहां आप ने इंटिमेट महसूस किया. यह गेम कपल्स को अपनी इच्छाओं के बारे में अधिक खुलने का मौका देता है.

सैक्स पजल

इस में साधारण पजल के साथ थोड़ा ट्विस्ट भी है. इस में कपल साथ में पजल पूरा करेंगे, लेकिन हर सही पीस जोड़ने पर एक रोमांटिक हरकत करनी होगी. यह गेम रिश्ते में करीबी और मस्ती लाता है.

द इंटीमेट कपल्स क्विज

इस गेम में कपल्स एकदूसरे से सवाल पूछते हैं, जो दोनों के रिश्ते और पसंदनापसंद को जानने में मदद करता है. हर सही उत्तर के लिए एक रोमांटिक रिवौर्ड रखा जा सकता है.

यह रिश्ते को मजबूत बनाने और एकदूसरे को बेहतर समझने के लिए बढ़िया गेम है.

कैंडल और सैंसेशन गेम

यह गेम हौट और कोल्ड सैंसेशन के साथ रोमांचक है. इस में कपल एक हलकी फ्रैगरेंस कैंडल जला कर उस के पिघले मोम का यूज एकदूसरे की बौडी पर करते हैं. इस के साथ ही, बर्फ के टुकड़े से शरीर पर हलकी ठंडक देते हैं. हौट और कोल्ड का यह कौम्बिनेशन रिश्ते में उत्तेजना बढ़ाता है.

आई कांट वेट

इस गेम में आप और आप का पार्टनर एकदूसरे के लिए आकर्षक कपड़े पहन कर आते हैं. यह गेम तब तक चलता है जब तक दोनों का सब्र टूट न जाए. जो पहले हार मानता है, उसे एक रोमांटिक सजा मिलती है.

म्यूजिकल मूड्स

रोमांटिक गानों की एक प्लेलिस्ट बनाएं और हर गाने के मूड के अनुसार एक्ट करें. यह गेम न केवल मस्ती का कारण बनता है, बल्कि रिश्ते को और खास बनाता है.

टाइम ट्रैवल डेट

अपने पहले डेट की यादें ताजा करें और उसे फिर से ऐक्ट करें. वही कपड़े पहनें, उसी जगह पर जाएं और एक ही मूड को फिर से जिएं. यह गेम रिश्ते में भावनात्मक गहराई लाता है.

–प्रतिनिधि ●

टैक गैजेट्स

बोल्ड हैल्थ आई मास्क

आंखों को आराम देने के लिए स्ट्रेचेबल आई कूलिंग जैल पैड सूजी हुई आंखों, काले घेरों और महीन रेखाओं का इलाज करता है. यह एक अर्फोडेबल कंप्रैस थेरैपी जैसा है. जैल आई मास्क को फ्रीज कर के आंखों पर लगाते हैं जिस से थकी आंखों को राहत मिलती है.

मिलिट्री मिनी आर्मी टूलकिट

जन्मदिन, सालगिरह, क्रिसमस, वेलेंटाइन डे, दोस्तों के लिए उपहार देने का बैस्ट ऑप्शन है. स्मार्ट, 6 इन 1 आर्मी टूलकिट किचन जो विभिन्न उपकरणों, टॉर्च के साथ उपयोगी है और घर या काम पर उपयोग के लिए एक आसान की चेन भी है.

स्मार्ट वाईफाई सीसीटीवी कैमरा

यह एक वेदरप्रूफ फुल एचडी स्मार्ट कैमरा है जो क्रिस्टल क्लियर वीडियो कैप्चर कर शानदार इमेज क्वालिटी प्रदान करता है. इस की बिल्ट इन स्पौटलाइट तेजी से फ्लैश कर के सुरक्षा को बढ़ाती है.

डफल बैग विद सेपरेट शू कम्पार्टमैंट

ट्रैवल डफल बैग हाई क्वालिटी पौलिएस्टर मैटीरियल से बना है. अलग शू कम्पार्टमैंट बिल्ट इन है. यह एडजस्टेबल शोल्डर स्ट्रैप आरामदायक है. स्टोरेज अच्छी है. सामान को व्यवस्थित रखता है.

मैगनैटिक प्लास्टिक रैप डिस्पैंसर

किचन रोल होल्डर + क्लिंग फिल्म और टिन कौयल डिस्पैंसर और कटर, औल इन वन डिजाइन की मदद से किचन काउंटर पर बहुत ज्यादा जगह बचती है. यह एक्सैस करने में बहुत सुविधाजनक है.

एजुकेशनल ग्लोब

बच्चों के लिए इस एजुकेशनल ग्लोब में जानवरों, स्थानों, स्मारकों और अन्य चीजों के बारे में 1000 से ज्यादा तथ्य हैं. बच्चों के लिए और बूट अर्थ औगमेंटेड रियलिटी आधारित मजेदार लर्निंग टूल है.

स्टेनलैस स्टील होम वेजिटेबल कटर

इस स्टेनलैस स्टील स्लाइसर के साथ स्मूद मोशन में परफैक्ट फ्रैंच फ्राइज काटें. यह मल्टी फंक्शनल फैशन किचन प्रोडक्ट समय बचाता है.

–किरण कश्यप ●

जब टीचर पर क्रश हो

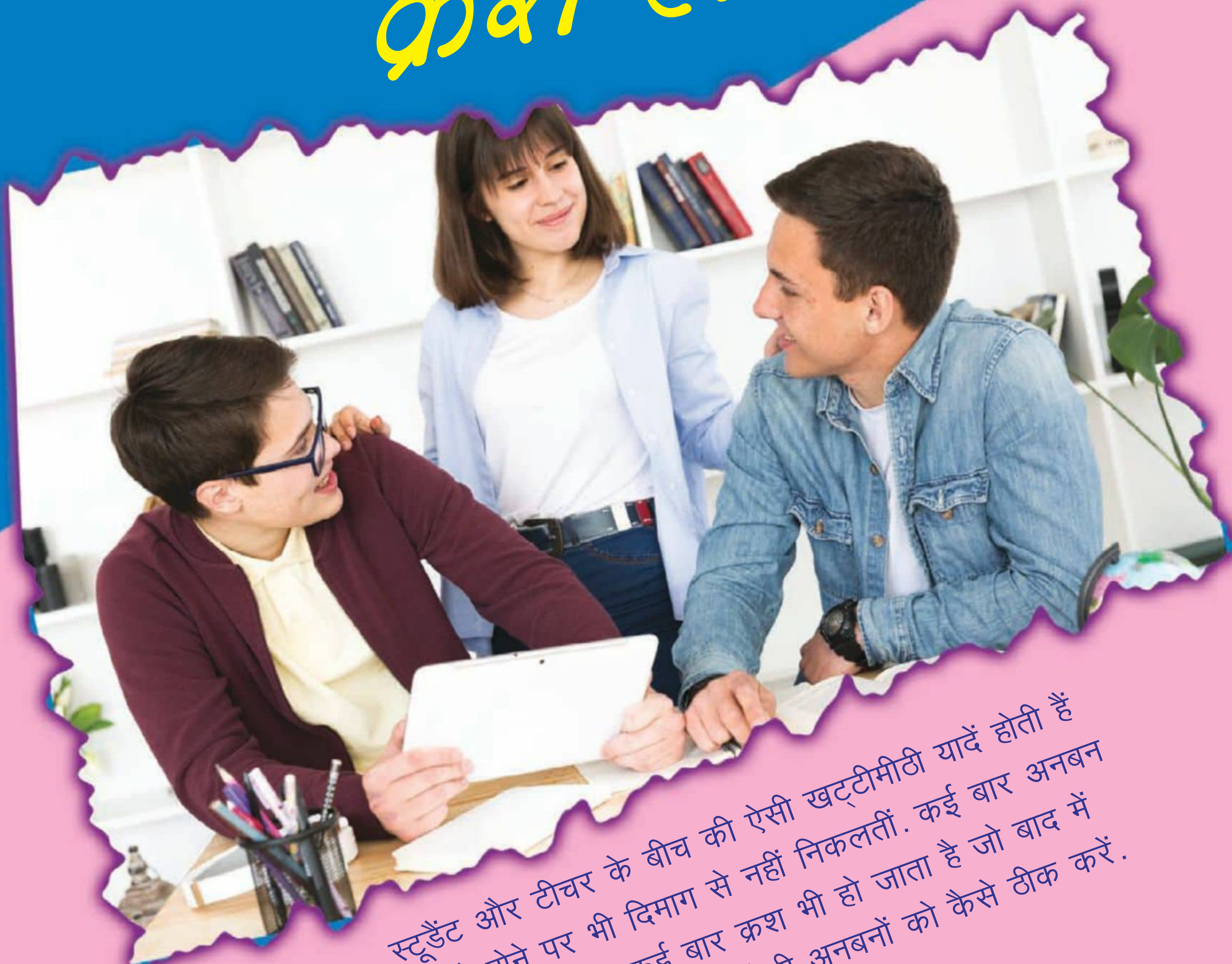

स्टूडैंट और टीचर के बीच की ऐसी खट्टीमीठी यादें होती हैं जो बड़े होने पर भी दिमाग से नहीं निकलतीं. कई बार अनबन भी होती हैं और कई बार क्रश भी हो जाता है जो बाद में बचकाना लगता है. जानिए ऐसी अनबनों को कैसे ठीक करें.

15 साल की उम्र के बाद टीनएजर स्टूडैंट को अकसर अपनी टीचर इतनी अच्छी लगने लगती है कि उन्हें लगता है कि उन्हें टीचर से प्यार हो गया है. उन का ध्यान पढ़ाई में कम, टीचर को घूरने में ज्यादा होता है. टीचर ये सब नोटिस करती हैं और झुंझला कर डांट लगाती हैं लेकिन कह नहीं पातीं कि वह समझ रही हैं तुम्हें मुझ पर क्रश हो गया है.

इसलिए अगर आप कुछ ऐसा कर रहे हैं तो रुक जाएं. यह आप की पढ़ाई के लिए भी ठीक नहीं है. अपना ध्यान न भटकाएं. यह सब करने के लिए पूरी उम्र पड़ी है. बहुत से मौके आएंगे लेकिन टीचर अगर चिढ़ गई तो प्रैक्टिकल के मार्क्स तो समझो गए. इसलिए अब खुद ही सोच लें कि आप को क्या करना है.

फ्लर्टिंग और तारीफ के बीच के फर्क को समझें

आकाश अपने दोस्त को बता रहा था कि आज रचना मैडम ने मुझ से कहा कि यह हेयरकट तो तुम पर बहुत सूट कर रहा है. यार, पहले भी मैं ने देखा है वे मुझे नोटिस करती हैं. जब भी मैं कुछ नया पहन कर आता हूं तो मुझ पर कमैंट करने से पीछे नहीं हटतीं. कई लोगों को टीचर का इस तरह करना अच्छा तो लगता है पर उन्हें लगता है टीचर उन्हें पसंद करती हैं, इसलिए ऐसा कर रही हैं जबकि वास्तव में ऐसा होता नहीं है.

अगर टीचर आप की हेयरस्टाइल को अच्छा बता रही हैं तो इस का मतलब यह बिलकुल नहीं है कि वे आप को लाइन मार रही हैं. कई बार टीचर स्टूडैंट और अपने बीच की दूरी को कम करने के लिए भी ऐसा करती हैं, थोड़ा फ्रैंडली माहौल बनाने के लिए ताकि वे स्टूडैंट को करीब से जान सकें और उन की समस्याओं को समझ कर उन्हें उन के हिसाब से पढ़ा सकें. इसलिए समझें हर तारीफ फ्लर्टिंग नहीं होती.

पढ़ाई पर ध्यान देते हैं या नहीं

टीचर से अनबन का एक कारण यह भी होता है कोई स्टूडैंट अगर पढ़ाई पर ध्यान नहीं दे रहा तो टीचर उसे बारबार टोकेंगी ही, वह ऐसा उस के अच्छे फ्यूचर के लिए ही करती हैं. लेकिन स्टूडैंट को लगता है वे मुझे पसंद नहीं करतीं, इसलिए मेरे पीछे पड़ी रहती हैं. जरा एक बार कारण खोज कर देखें कि क्या आप क्लास में पूरा धयान देतें हैं? क्या आप अपनी पढ़ाई के प्रति लापरवाह नहीं हैं? अगर आप ढंग से पढ़ेंगे तो यकीनन टीचर का आप से कोई बैर नहीं है. वे आप को उतना सम्मान देंगी जितना बाकी स्टूडैंट्स को देती हैं.

इन तरीकों से अनबन दूर करें

खुद में सुधार करें

आप को जहां लगता है सुधार की जरूरत है वहां सुधार करें. टीचर अगर कोई फीडबैक देती हैं तो उसे समझें और खुद में बदलाव लाने की कोशिश करना कोई बुरी बात नहीं है.

अपना रोब न झाड़ें

अगर बातबात में आप को अपने पैसे का रोब झाड़ने की आदत है तो यह बात टीचर तो क्या, किसी को भी पसंद नहीं आएगी. यहां आप पढ़ने आते हैं. यहां सब स्टूडैंट समान हैं. इसलिए स्कूल की यूनिफौर्म, क्लासेस भी एकजैसी होती हैं. टीचर के लिए कोई छोटा या बड़ा नहीं है, इसलिए सब से बराबरी का व्यवहार करें और करवाएं.

अपनी गलतियों की माफी मांगें

अगर टीचर से आप ने कभी कोई बदतमीजी की और वे उस वजह से आप से चिढ़ती हों तो अब उस बात को माफी के साथ खत्म करें. इस से टीचर की नाराजगी भी दूर होगी.

टीचर को भी उन की गलती का एहसास कराएं

अगर टीचर आप के साथ कुछ गलत कर रही हैं तो उन से जा कर सीधे बात करें और उन की गलती का उन्हें एहसास कराएं. ऐसा करने पर टीचर आप से नहीं चिढ़ेंगी और उन्हें अपनी गलती का एहसास भी होगा.

शरारतें कम करें, टीचर आप से बड़ी हैं

अगर आप बहुत शरारती हैं और हर वक्त टीचर को परेशान करने के नएनए तरीके खोजते रहते हैं तो ऐसा न करें. वे आप से बहुत बड़ी हैं. कभीकभार शरारत करना और बात है लेकिन हर वक्त अच्छा नहीं लगता. ऐसा करने पर टीचर आप से चिढ़ने लगेंगी.

इस के अलावा भी कुछ और कारण होते हैं जैसे–

मैं कोई शिक्षक नहीं हूं, बस एक साथी यात्री हूं जिस से तुम ने राह पूछी है.' महान नाटककार, आलोचक और नोबेल पुरस्कार

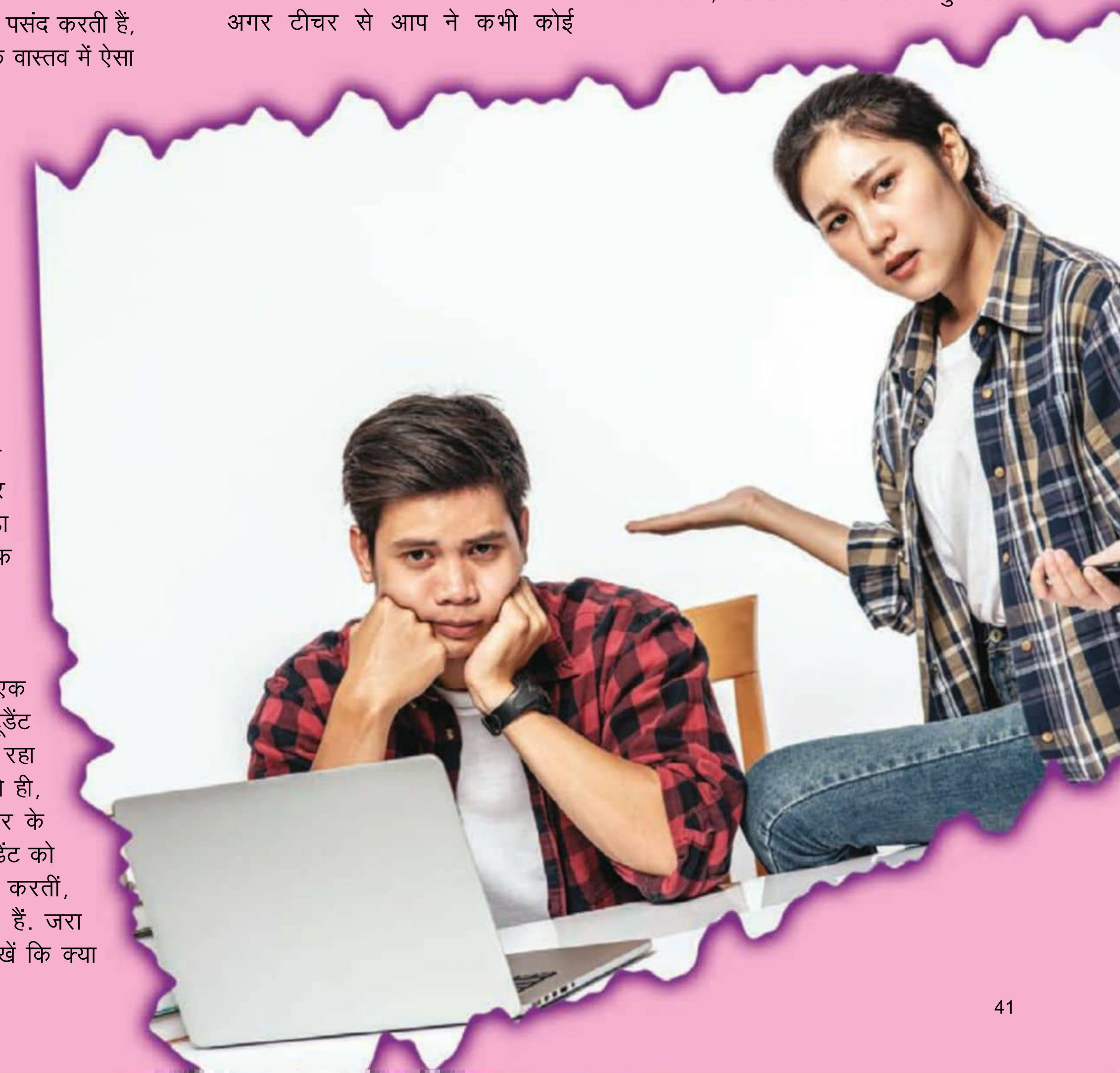

साहित्य विजेता जौर्ज बर्नार्ड शा का यह कथन शिक्षक की अहमियत को और बढ़ा देता है. टीचर केवल किताबी ज्ञान नहीं देते, वे जीवन की राह भी दिखाते हैं. वे आप को दुनिया के बीच खड़े होने को तैयार करते हैं. वही अनुशासन सिखाते हैं.

स्टूडैंट और टीचर का रिश्ता काफी खास होता है. पेरैंट्स के बाद अध्यापक को ही टीनएजर का दूसरा गुरु माना जाता है. शिक्षक भी बच्चों के भविष्य को बेहतर बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ते हैं, लेकिन कई बार स्टूडैंट और टीचर की रिलेशनशिप ज्यादा मजबूत नहीं होती है. कालेज में बैस्ट परफौर्मैंस देने के बाद जहां शिक्षक टीनएजर की सराहना करते हैं तो वहीं गलती करने पर टीनएजर को फटकार लगाने से भी नहीं चूकते हैं. ऐसे में ज्यादातर टीनएजर के साथ शिक्षक का रिश्ता बेहतर नहीं बन पाता है.

दरअसल टीचर जब होमवर्क दे या डांटे तो वह आप को बुरी लगती है और जब तारीफ करे तो अच्छी. इसी तरह के कुछ खट्टेमीठे पलों से बनता है यह रिश्ता. लेकिन कई बार टीचर और स्टूडैंट के बीच किसी बात को ले कर अनबन काफी बढ़ जाती है. यह स्थिति दोनों के लिए ही सही नहीं होती क्योंकि इस का सीधा असर पढ़ाई और आने वाले भविष्य पर पड़ता है. सो, आइए जानें कि टीचर से अनबन या झगड़ा होने के क्या कारण होते हैं और उन्हें कैसे दूर करें.

क्या होते हैं टीचर से अनबन के कारण

सिचुएशन–1 टीचर घर का काम करवाती है : रोहित का कहना है, ''मेरे एक ट्यूशन वाले सर हैं. पढ़ाते बहुत अच्छा हैं लेकिन उन की एक बुरी आदत है, वे पढ़ाने के बदले पैसे तो लेते ही हैं, साथ ही, उन्हें और भी फेवर चाहिए. वे अपने घर के सारे काम हम से करवाते हैं. कोई बिल जमा करना हो तो रोहित कर देना, औनलाइन बुकिंग तक तो चलो समझ आता है लेकिन हद तो तब हो गई जब वे अपने घर की सब्जियां और राशन तक हम से ही मंगवाने लगे. इन बातों को ले कर मेरा उन से झगड़ा हो गया. मैं ने उन्हें एक दिन खूब सुना दिया और कहा कि मैं उन का पर्सनल कोई भी काम नहीं करूंगा. बस, तभी से वे मेरे दुश्मन बन गए.''

सोल्यूशन क्या है– इस तरह लड़ने से कुछ नहीं होगा. आप ने फीस भी ट्यूशन की पूरे साल की दे रखी होती है. ऐसे में बीच में ट्यूशन छोड़ी भी नहीं जा सकती. इसलिए उन से आराम से बात करें कि पढ़ाई के साथ आप के पास इन सब कामों के लिए समय नहीं होता है. कभीकभार कोई काम में मदद चाहिए तो ठीक है. अगर वे तब न समझें तो अपने पेरैंट्स को यह समस्या बताएं, वे टीचर से बात कर के इस का हल निकाल लेंगे.

सिचुएशन –2 मेरे पापा पुलिस में बड़ी पोस्ट पर हैं, इसलिए चिढ़ती हैं : रचना का कहना है, ''मेरी मैथ्स की टीचर हमेशा मुझे ताना देती है कि होंगे तुम्हारे पापा कोई बड़े अफसर लेकिन यहां कोई रोब नहीं चलेगा. तुम्हें भी गलती करने पर वही पनिशमैंट मिलेगी जो बाकियों को मिलती है. हर वक्त पापा का नाम लेले कर मुझे सुनाती रहती है.''

सोल्यूशन क्या है– ऐसी सिचुएशन में आप को टीचर से नहीं बल्कि खुद से सवाल करने की जरूरत है कि कहीं ऐसा तो नहीं, आप ही बातोंबातों में किसी स्टूडैंट पर अपने पापा की पोस्ट का रोब झाड़ती हों और किसी ने यह चुगली टीचर से कर दी हो. अगर ऐसा नहीं है तब भी टीचर से अकेले में बात करें और पूछें कि वे ऐसा क्यों करती हैं. यकीनन, बात करने पर समस्या का हल निकलेगा. साथ ही, आप भी ध्यान रखें कि आप के व्यवहार से ऐसा न झलके कि आप के पापा बड़े अफसर हैं तो आप सैलिब्रिटी बन गए हैं.

सिचुएशन –3 हमारी दोस्ती पसंद नहीं : आशा का कहना है, ''मैं और मेरी बैस्टी एक ही सीट शेयर करते हैं लेकिन इस बात से मैडम को जाने क्या चिढ़ है, वे हमारे पीछे लगी रहती हैं कि अलगअलग सीट पर बैठो. शायद उन्हें हमारी दोस्ती पसंद नहीं.

सोल्यूशन क्या है– अगर टीचर को आप की दोस्ती पसंद नहीं तो भी क्या हुआ, वे आप के भले के लिए ही कह रही होंगी. हो सकता है आप को पता न चलता हो कि एकसाथ बैठ कर आप दोनों बातों में इतना मगन हो जाती हों कि टीचर की बात पर ध्यान न दे पाती हों. दूसरे, टीचर चाहती होंगी कि आप की बाकी लोगों से भी दोस्ती हो ताकि आप थोड़ी सोशल बनें. अपनी बैस्टी से तो आप लंच टाइम में या फिर घर पर या किसी और पीरियड में दोस्ती निभा लेंगी या फिर एकआध बार साथ बैठें और कुछ दिन अलग ताकि टीचर को बोलने का मौका न मिले.

सिचुएशन 4 – एक बार टीचर की शिकायत कर दी थी : रजत ने बताया हमारी टीचर हर समय फोन पर लगी रहती थी और पढ़ने के बजाय इधरउधर की बात करती रहती थी जिस की वजह से पढ़ाई का बहुत नुकसान हो जाता था. एक बार प्रिंसिपल टीचर्स का सर्वे करने आई तो मैं ने सारी बातें उन्हें बता दीं. उस दिन के बाद टीचर मुझ से हर बात पर चिढ़ती है. हर वक्त मुझ से सवालजवाब करती है. न जवाब दूं तो खूब सुनाती हैं कि तुम्हें तो बहुत पढ़ना था, अब क्या हो गया.

सोल्यूशन क्या है– हालांकि टीचर की शिकायत प्रिंसिपल से करने से बेहतर था आप खुद ही टीचर से बात करते लेकिन अगर ऐसा हो ही गया है तो टीचर से बात करें कि अगर उन्हें बुरा लगा तो सौरी. उन्हें मनाने की कोशिश करें. दूसरे, आप इतना पढ़ें कि उन के हर सवाल का जवाब आप के पास होना चाहिए ताकि उन्हें लगे कि सच में ही आप पढ़ना चाहते थे. यह एक समस्या थी, न कि शिकायत. –प्रतिनिधि ●

सरिता क्यों पढ़ें

गूगल से बहुत कुछ ढूंढ सकते हैं पर क्या ढूंढना है, उस का क्या करना है, उसे जिंदगी में कैसे इस्तेमाल करना है, इस के लिए जो बड़ी दृष्टि चाहिए, यह सरिता करती है. कईकई दिशाओं के लाभ दिखाने वाले लेख, सरकारी मनमानी की पोल खोलने वाली रिपोर्टें, सरकार व शासन के कामकाज पर सब से ज्यादा खुल कर लिखे रिव्यू और सब से बड़ी बात, दिल को छू जाने वाली मनोरंजक कहानियां.

सरिता पढ़िए, जीवन बनाइए. हर अंक, लगातार, बारबार.

कहां से पाएं

हमारी पत्रिका सारे देश में मिलती है. अगर आप के घर के पास स्टौल नहीं है या अखबार वाला नहीं ला कर दे रहा, तो वार्षिक ग्राहक बनें.

आसानी से वार्षिक ग्राहक बनें

हमारी वैबसाइट sarita.in पर जाएं.

वहां से अपनी सरिता को चुनें, पेमैंट स्क्रीन पर अपनेआप आएगी. क्रैडिट कार्ड से भुगतान करें. भुगतान होने के 2 से 3 सप्ताह के बीच आप को नया अंक 'मैगजीन पोस्ट' से मिलना शुरू हो जाएगा और फिर हर अंक मिलता रहेगा.

क्यूआर कोड स्कैन करें

दिल्ली प्रैस पत्रिकाएं घरघर उजाला जलाएं

फैशन एंड स्टाइल

मोनोक्रौम जैकेट लुक क्लीन और अट्रैक्टिव लुक देता है. अपने वार्डरोब में इस के लिए जगह जरूर रखें.

विंटर में कम्फर्टिंग और स्टाइलिश कैप के साथ आप कूल आउटफिट क्रिएट कर सकती हैं.

कारगो पैंट्स का फैशन पुराना है. इन दिनों ये मेन स्ट्रीम बन गया है और जेनजी को काफी पसंद आ रहा है.

आजकल टोनल ड्रैसिंग काफी ट्रैंड में है. ब्लेजर और पैंट सीजनल आउटफिट है.

गोल्ड प्लेटेड ज्वैलरी हर आउटफिट के साथ प्ले करती है. गोल्ड प्लेटेड बैंगल्स और रिंग आउटफिट को कौंप्लिमैंट करती हैं.

कम्फर्टिंग शूज आजकल काफी ट्रैंडी हो गया है. कलरफुल और क्यूट क्रोक्स आउटफिट के साथ कूल लगते हैं.

–कुमकुम ●

क्या इन्फ्लुएंसर्स देते हैं सही जानकारी

आज युवा अपना सब से ज्यादा समय सोशल मीडिया पर बिता रहा है. वह अपनी समस्या का हल ढूंढ़ने की जगह सोशल मीडिया का सहारा लेने लगा है. इन्फ्लुएंसर्स का बड़ा वर्ग इन युवाओं को अपना फौलोअर्स बना रहा है और इन के द्वारा ऐसा कंटेंट परोसा जा रहा है जो भटकाने का ही काम कर रहा है.

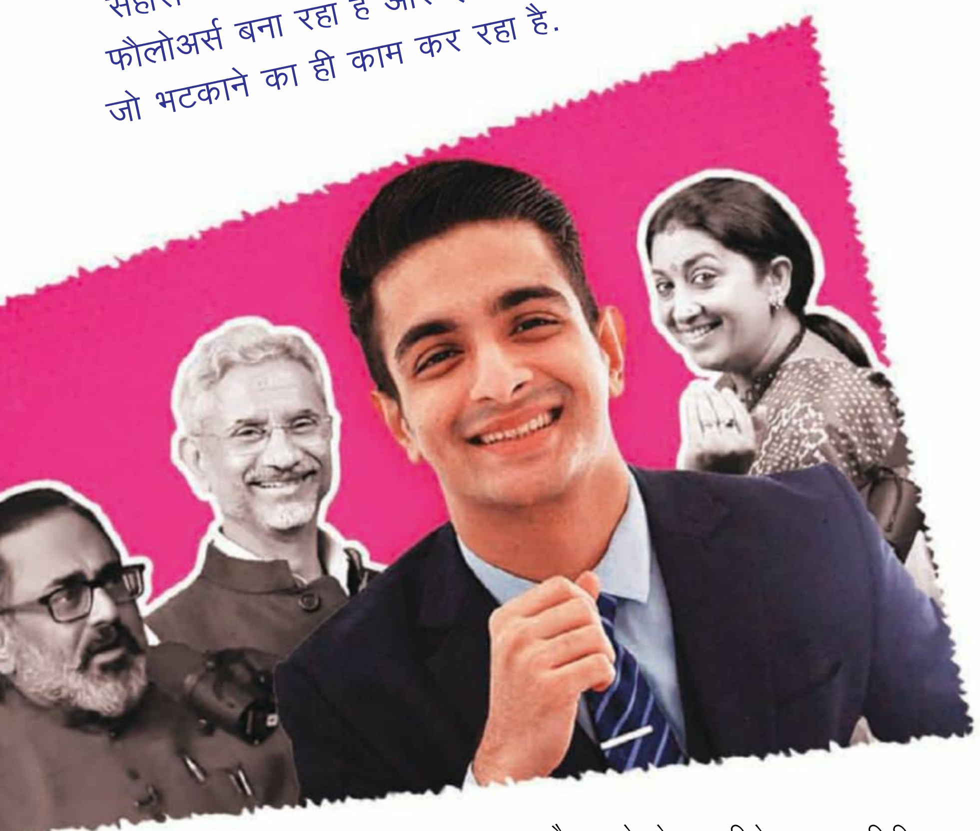

यंगस्टर्स इन्फ्लुएंसर्स की फैन फौलोइंग देख कर उन पर आंख बंद कर के भरोसा कर रहे हैं और सोचते हैं कि वे उन्हें सही जानकारी दे रहे हैं जबकि ऐसा नहीं है.

यूनेस्को की हाल की एक रिपोर्ट के अनुसार कंटेंट क्रिएटर फैक्ट चैक करने से कतरा रहे हैं. यूनेस्को द्वारा किए गए सर्वेक्षण के मुताबिक 62 फीसदी कंटेंट क्रिएटर किसी भी खबर या जानकारी को शेयर करने से पहले स्टैंडर्ड तरीके से उस का फैक्ट चैक नहीं करते हैं.

ये इन्फ्लुएंसर्स सिर्फ प्रोडक्ट्स या सर्विस के प्रचार तक सीमित रहते हैं. ये इन्फ्लुएंसर्स फैशन से ले कर रिलेशन तक, फिजिकल फिटनैस से ले कर स्किन केयर तक, ट्रैवल, इन्वैस्टमैंट, लाइफ स्टाइल, धर्म, राजनीति जैसी हर चीज पर एक्सपर्ट बन कर अपनी राय रखते हैं और युवा जो इन की दी सलाह पर चलने में सक्षम नहीं होते वे कुंठा, असुरक्षा और हीनता की भावना से घिरने लगते हैं. अपने फैसलों को ले कर उन का आत्मविश्वास डगमगाने लगता है और वे डिप्रैशन, बौडी डिस्मार्फिया, एंग्जाइटी जैसी मानसिक समस्याओं में घिरने लगते हैं.

कोई इन इंफ्लुएंसर्स और इन के फौलोअर्स को समझाए कि जब किताब के एक पेज को पढ़ कर किताब की पूरी जानकारी नहीं मिल सकती तो क्या 15-30 सैकंड के रील में इन्फ्लुएंसर्स जो जानकारी दे रहे हैं क्या सही दे रहे हैं?

आधी से ज्यादा गलत जानकारी

किसी भी फील्ड के एक्सपर्ट को सालों की मेहनत, पढ़ाई, डिग्री, अनुभव के बाद अपनी फील्ड की जानकारी मिलती है. वे इस के स्पैशलाइज्ड होने के लिए सालों खपाते हैं. बाल सफेद करते हैं लेकिन ये इन्फ्लुएंसर्स खुद को 15 से 30 सैकंड की रील में स्पैशलाइज्ड समझने लगते हैं. ये अपने यंग फौलोअर्स को बिना जानकारी इकट्ठा किए, बिना पढ़े पूरे कौन्फिडैंस के साथ बढ़चढ़ कर जानकारी देते हैं.

जो भी इन्फ्लुएंसर्स अपने यंग फौलोअर्स को जानकारी दे रहे हैं वे खुद उस फील्ड के एक्स्पर्ट्स नहीं हैं कुछ तो 12वीं पास हैं, कुछ सिर्फ ग्रेजुएट हैं फिर उन के द्वारा दी जानकारी पर यूथ को क्यों भरोसा करना चाहिए, यह समझने वाली बात है.

यूथ इन इन्फ्लुएंसर्स की फैन फौलोइंग देख कर उन पर आंख बंद कर के भरोसा करते हैं और सोचते हैं कि वे उन्हें सही जानकारी दे रहे हैं जबकि वास्तव में ऐसा नहीं होता.

इन्फ्लुएंसर्स सिर्फ रटीरटाई बातें कहते हैं, वह भी यहांवहां से जोड़तोड़ कर इकट्ठा की गई होती हैं. उन्हें खुद नहीं पता होता कि वे क्या बोल रहे हैं बस वे स्क्रीन पर आ कर वह लाइंस बोल देते हैं और यूथ उन की बातों पर भरोसा कर लेता है.

इन्फ्लुएंसर्स द्वारा रील्स, शौर्ट वीडियोज में दी जाने वाली जानकारी कई किताबों की आधीअधूरी लाइंस का कौकटेल होता है, जिस का कोई सिरपैर नहीं होता. कई बार तो रील का टाइटल कुछ और होता है और उस में कही जाने वाली बात कुछ और होती है. यह किसी भी यूथ को गुमराह करने के लिए काफी है. इन्फ्लुएंसर्स द्वारा दी जाने वाली इस तरह की बिना रिसर्च की आधीअधूरी जानकारी से यूथ में कन्फ्यूजन क्रिएट हो रहा है. वह सही गलत का जजमैंट नहीं कर पा रहा, उस की किसी भी बात या जानकारी को एनालाइज करने की पावर खत्म होती जा रही है.

इन्फ्लुएंसर्स पर ट्रस्ट सोचसमझ कर

शायद आप नहीं जानते होंगे कि आज ऐसे कई सोशल मीडिया प्लेटफौर्म्स और वैबसाइट्स मौजूद हैं जहां से कोई भी पैसे दे कर फौलोअर्स, लाइक्स और व्यूज बढ़ाने की सर्विस ले सकता है. यानी कि फौलोअर्स खरीदे जा रहे हैं और इस के लिए बाकायदा सोशल मीडिया प्लेटफौर्म्स की ओर से स्पौंसर्ड विज्ञापन दिखाए जाते हैं.

इसलिए किसी भी इन्फ्लुएंसर को फौलो करने और उस की जानकारी पर भरोसा करने से पहले संभल जाएं. अगर आप को सोशल मीडिया पर कोई ऐसी आईडी नजर आए जिस के फौलोअर्स अचानक ही बढ़ गए हों तो हो सकता है कि उस ने फौलोअर्स खरीदे हों. जी हां, सोशल मीडिया पर इन दिनों 50 रुपए में 1000 फौलोअर्स, 5 रुपए में 100 लाइक्स और 5 रुपए में 1000 व्यूज तक बढ़ाने के बेसिक पैकेज दे कर लोगों को अपनी ओर खींचा जा रहा है. कई डिजिटल मार्केटिंग एजेंसियां हैं जो व्यूज बढ़ाने के तरीके बताती हैं. फिर चाहे उस के लिए जैसे तिकड़म करने पड़ें.

आप सोचेंगे कि इतने सस्ते में फौलोअर्स, लाइक्स कैसे मिलते हैं तो आप को बता दें कि ये डैड आईडीज का सहारा ले कर किया जाता है. न ये काम करती हैं और न ही इन पर कोई असली व्यक्ति होता है. यानी यह सब एक गोरखधंधा है यूथ को अपनी राह से भटकाने का.

नैगेटिव प्रभाव डालने वाले इन्फ्लुएंसर्स से बच कर रहें

आजकल इनफ्लुएंसर्स सट्टेबाजी ऐप और औनलाइन जुआ प्लेटफौर्म के विज्ञापन भी करने लगे हैं और यूथ सोचता है कि इतना बड़ा इन्फ्लुएंसर प्रमोशन कर रहा है तो सही ही होगा और इस तरह के विज्ञापन से युवा उन पर विश्वास कर के अपना मोटा नुकसान कर बैठते हैं. कई फाइनैंस की भी जानकारी देते हैं, जिस में घुमाफिरा कर किसी विशेष शेयर को खरीदने की बात कह देते हैं, इस से भी कई लोग नुकसान उठा लेते हैं. इसलिए युवाओं को इन्फ्लुएंसर द्वारा दी जाने वाली जानकारी पर भरोसा न करने की सलाह दी जाती है.

ये इनफ्लुएंसर्स आर्थिक लाभ के लिए फैक्ट्स को तोड़मरोड़ कर प्रस्तुत करते हैं. गलत जानकारियों के साथ खुद को इन्फ्लुएंसर्स के रूप में पेश करते हैं और बेचारा यूथ इन की बातों में आ कर इन की चमकधमक में उन्हें फौलो करने लगता है.

फौलोअर्स के बेस पर नहीं करें इन्फ्लुएंसर्स का चुनाव

आज युवा अपना सब से ज्यादा समय सोशल मीडिया पर बिता रहा है. वह अब किताबों में अपनी समस्या का हल ढूंढ़ने की जगह सोशल मीडिया का सहारा लेने लगा है. ऐसे में एक बड़ा वर्ग इन युवाओं को अपना फौलोअर्स बना रहा है और इस वर्ग द्वारा ऐसा कंटेंट परोसा जा रहा है जिस में युवा अपनी राह से भटक रहा है, उन की बातों में आ रहा है. ये इन्फ्लुएंसर्स पैसे ले कर ऐसे कंटेंट की ब्रैंडिंग कर रहे हैं जो यूथ के लिए नुकसानदायक है.

रील्स के माध्यम से इन्फ्लुएंसर्स कुतार्किक बातें करते हैं कई तो धार्मिक उन्माद बढ़ाने तक का काम करते हैं. इतिहास के बारे में भी गलत जानकारी दी जा रही है. माइथोलौजिकल गप्पों से पूरा इंटरनैट भरा पड़ा है, इस में इन्फ्लुएंसर्स की बड़ी भूमिका है जो अनापशनाप कुछ भी बिना तथ्यों के कहते रहते हैं.

सोशल मीडिया में इन्फ्लुएंसर्स द्वारा दिखाई जाने वाली 30 सैकंड की

रील्स को मनोरंजन के लिए देखना तो कुछ हद तक ठीक भी है लेकिन इन रील्स को यूथ नौलेज कंजंप्शन का जरिया भी मानने लगा है जो उन के लिए खतरनाक है.

कई इन्फ्लुएंसर्स यूट्यूब शौर्ट्स, इंस्टाग्राम पर सेहत, डाइट और न्यूट्रिशन के बारे में भरभर कर जानकारी दे रहे हैं और यूथ इन्हें आम जिंदगी में अप्लाई भी कर रहे हैं. यूथ को इस जानकारी को अपनी जिंदगी में अप्लाई करने से पहले यह समझना होगा कि ये इन्फ्लुएंसर्स सर्टिफाइड डाक्टर्स, न्यूट्रिशनिस्ट या हैल्थ एक्सपर्ट नहीं हैं. कई हैल्थ के उटपटांग टिप्स देते हैं. एक इन्फ्लुएंसर का दूसरे की बात काटना इसलिए भी जरूरी हो जाता है ताकि लोग उसे सही मानें, इसलिए इन की बातें आपस में मेल भी नहीं खातीं. बहुत से प्रोडक्ट्स का प्रचार करने के लिए जबरन तारीफें करते हैं.

98 प्रतिशत रुपए गलत जानकारी पर आंख मूंद कर भरोसा

हाल ही में आई 'माय फिटनैस पैल' और 'डब्लिन सिटी यूनिवर्सिटी' की एक जोइंट स्टडी के मुताबिक 57 रुपए मिलेनियल और जेनजी यूजर्स सोशल मीडिया रील्स में दी जा रही जानकारी को सच मान कर अपनी जिंदगी में अप्लाई कर रहे हैं. स्टडी में ये भी पता चला कि न्यूट्रिशन और डाइट के बारे में सिर्फ 2 रुपए वीडियोज में ही सही इन्फौर्मेशन दी गई है. यानी 98 रुपए लोग गलत जानकारी दे रहे हैं, जिसे यूथ आंख मूंद कर फौलो किए जा रहा है.

हैल्थ और न्यूट्रिशन के ये वीडियोज की बातों को फौलो करना बेहद खतरनाक हो सकता है क्योंकि इन वीडियोज में लोग एक जेनेरिक किस्म का डाइट प्लान बताया जाता है जो हर देखने वाले के लिए सही नहीं हो सकता क्योंकि हर किसी का बीएमआई इंडैक्स, उस के गोल्स और न्यूट्रिशनल जरूरतें अलगअलग होती हैं. 2 लोगों का एक्टिविटी लैवल अलग हो सकता है. किसी की सिटिंग जौब हो सकती है तो किसी की फील्ड जौब. ऐसे में दोनों की डाइट एकजैसी कैसे हो सकती है?

सोशल मीडिया पर इन्फ्लुएंसर किसी भी सब्जैक्ट का एक्सपर्ट बन कर ज्ञान दे रहा है और जो युवा इसे बिना सोचेसमझे फौलो कर रहे हैं, उन्हें कई मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा है.

हाल ही में सोशल मीडिया पर एक वीडियो में कहा गया, ''आजकल हरकोई सफेद बालों की समस्या से परेशान है. लेकिन अगर आप यह रेसिपी अपने बालों में लगाते हैं तो बुढ़ापे में भी सफेद बाल नहीं होंगे.''

यह वीडियो ब्यूटी और पर्सनल केयर इन्फ्लुएंसर, सुमन द्वारा अपलोड किया गया था. वीडियो में दिखाया गया कि एक इन्फ्लुएंसर ने बैगन को तेल में डुबो कर गरम किया, फिर उस में रोजमैरी और शिकाकाई डाला. इस तेल को एक जार में भर कर उसे बालों में लगाने का तरीका बताया पर क्या प्रूफ है कि इस से बाल काले ही हो जाएंगे? नहीं हुए तो क्या इन्फ्लुएंसर सार्वजनिक माफी मांगेगी?

इस वीडियो के वायरल होने के बाद यह सवाल उठने लगा है कि क्या सोशल मीडिया पर किसी भी प्रकार के हेयर केयर टिप्स को सही मान कर फौलो करना चाहिए.

उभरे और मोटे होंठ आज हर युवा लड़की की ख्वाहिश बनते जा रहे हैं. होंठों को मोटा बनाने के लिए लड़कियां कई तरह की कौस्मेटिक सर्जरी, फिलर्स और ब्यूटी हैक्स ट्राई कर रही हैं. ऐसे में पिछले दिनों दिल्ली की एक मशहूर इन्फ्लुएंसर शुभांगी आनंद ने इंस्टाग्राम पर होंठों को मोटा करने का एक ऐसा हैक शेयर किया है जिस ने हर किसी को चौंका दिया.

शुभांगी का यह वीडियो इंस्टाग्राम पर वायरल हो रहा है. इस वीडियो में शुभांगी आनंद हरी मिर्च का इस्तेमाल नैचुरल लिप प्लम्पर की तरह करती नजर आ रही हैं. वीडियो में देखा जाता है कि शुभांगी पहले हरी मिर्च काटती हैं और फिर उसे होंठों पर लगाती हैं. 2 सैकंड के बाद ही उन के होंठ बिल्कुल फूले और मोटे नजर आ रहे हैं.

कई इंटरनैट यूजर्स ने इसे खतरनाक बताया. जबकि कुछ लड़कियां इसे ट्राई करने और सही होने का दावा कर रही हैं. मैडम को शायद यह नहीं पता कि यह होंठों को मोटा करने की विधि नहीं बल्कि होंठों को मोटा करने की विधि है. जबकि हैल्थ एक्सपर्ट्स ने मिर्ची के इस्तेमाल से होंठों को मोटा करने के तरीके को गलत और स्किन साइड इफैक्ट्स वाला बताया है क्योंकि होंठों की त्वचा बहुत ही पतली और नाजुक होती है. ऐसे में हरी मिर्च का तीखापन और उस में मौजूद कैप्साइसिन होंठों को नुकसान पहुंचा सकता है. हरी मिर्च के तीखे तत्त्व होंठों की प्राकृतिक नमी को खत्म कर सकते हैं. इस की वजह से होंठ ड्राई और फटे हुए नजर आ सकते हैं. हरी मिर्च होंठों पर लगाने से खून आने का खतरा भी रहता है.

फाइनैंस एडवाइस देते इंफ्लुएंसर्स

सोशल मीडिया पर इन दिनों फाइनैंशियल एडवाइस देते इन्फ्लुएंसर्स की संख्या तेजी से बढ़ रही है. कोई क्रिप्टो में पैसे लगाने की सलाह देता है कोई शेयर मार्केट में. हद तो यह है कि कई बेटिंग में भी पैसा लगाने की बात करते हैं. ये गलत डेटा शेयर करते हैं.

ऐसे इन्फ्लुएंसर्स के हजारोंलाखों सब्सक्राइबर्स होते हैं. इन के वीडियोज पर अच्छीखासी संख्या में व्यूज भी आते हैं. कई बार उन की रील्स या वीडियो देख कर युवा निवेशक अपना पैसा लगा देते है जो उन्हें बहुत भारी पड़ता है.

सच तो यह है कि बहुत कम युवा सोशल मीडिया पर ज्ञान के सही स्रोत तक पहुंच पाते हैं. सोशल मीडिया ने असल जिंदगी और डिजिटल लाइफ के बीच का फर्क ही मिटा दिया है. युवा अब एक काल्पनिक दुनिया में जी रहे हैं. वे परिवार से, दोस्तों से, किताबों से और प्रकृति से दूर होते जा रहे हैं. यूथ को इस बात को समझना होगा कि कौन से इन्फ्लुएंसर्स उन के हित में हैं और कौन उन्हें भ्रमित कर रहे हैं. बिना सोचेसमझे उन की कही हर बात का अनुसरण करना यूथ को खतरे में डाल सकता है. –प्रतिनिधि ●

1082343

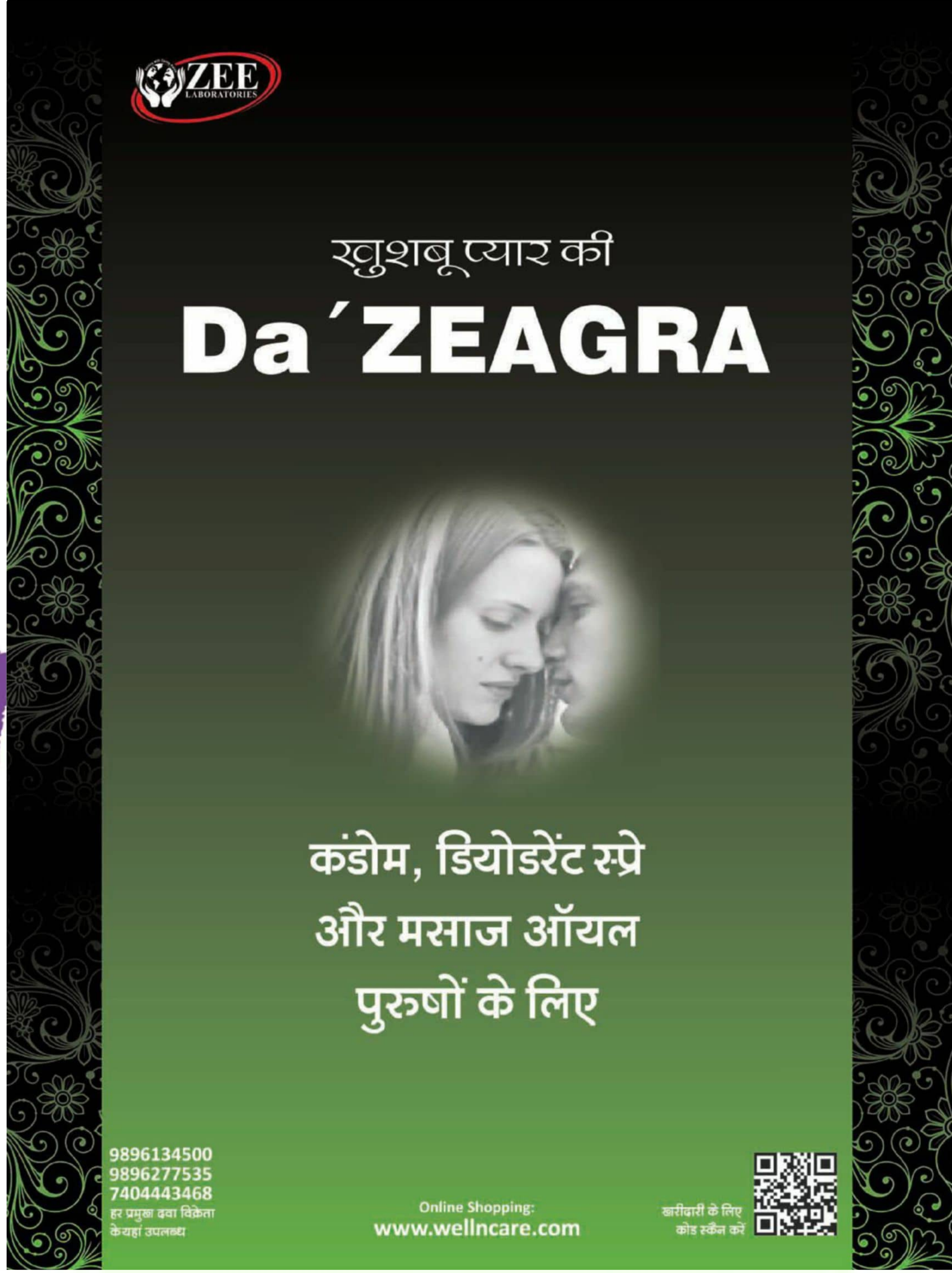

DL (DS)-11/MP/2022-24, (REGISTERED) RNI 6502/1960 DL(c)-14/1090/2024
P.O. SRT Nagar, ND-55 Posting Dt. 18 to 24 Published on 20/11/2024, Pgs. 48